★ वर्ष 46 ★ अंक 6 ★ जून 2019

₹15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

• वर्ष 46 • अंक 6 • जून 2019 • पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : सी. एल. गुलाटी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कॉलोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक **विमलेश आहूजा**

सहायक सम्पादक **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
9. समाचार
21. क्या आप जानते हैं?
44. पढ़ो और हँसो
46. कभी न भूलो
49. रंग भरो
50. बताओ तो जानें

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

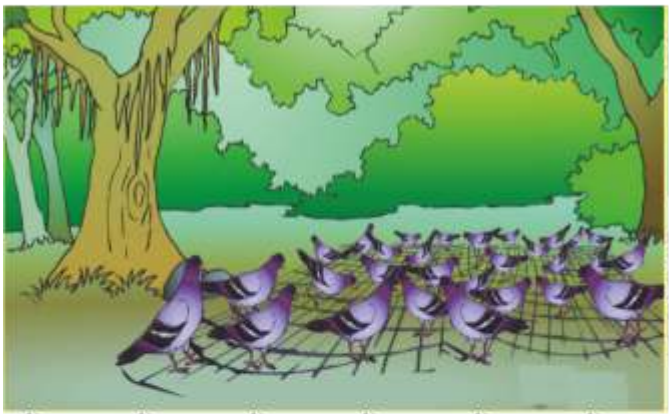

कहानियां

10. सबसे महान कौन?
: राधा नाचीज़
10. पारस
: कमला देवड़ा
11. दुश्मन बने दोस्त
: राधेलाल 'नवचक्र'
16. भारत की वीरांगनाएं
: अमित गुप्ता
23. बिखराव
: किशनलाल शर्मा
29. काला कौवा और पीली चिड़िया
: उदय ठाकुर
40. आत्मविश्वास की विजय
: सीताराम गुप्ता
41. बिन परिश्रम सब सून
: ऋचा राय
50. सर्वत्र ब्रह्म
: ऊषा सभरवाल

कविताएं

7. जल ही जीवन है
: रूपनारायण काबरा
19. दो बाल कविताएं
: रामअवध राम
25. गर्मी का गीत
: डॉ. हरीश निगम
25. पेड़ की छाया
: कमलसिंह चौहान
31. दो बाल कविताएं
: कमलसिंह चौहान
39. गर्मी के कोड़े
: दिनेश दर्पण
39. जल का उपयोग
: गफूर 'स्नेही'
47. दो बाल कविताएं
: मीरा सिंह 'मीरा'

विशेष/लेख

8. सूती परिधान
: अर्चना सौगानी
20. सूर्य की पुत्री : कपास
: जयेन्द्र
26. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई
: शिवचरण चौहान
32. उपयोगिता से भरपूर : नींबू
: राजकुमार जैन
38. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमण्डीलाल अग्रवाल
42. शुतुरमुर्ग
: विद्या प्रकाश

सबसे पहले

सावधानी और परहेज़

अस्वस्थ आदमी जल्द से जल्द स्वस्थ होना चाहता है और जब वह स्वस्थ हो जाता है तो फिर से वह बीमार नहीं होना चाहता। इस तरह स्वस्थ व्यक्ति हमेशा स्वस्थ ही रहना चाहता है।

आदमी पहले स्वस्थ ही होता है। बीमारी हमेशा बाद में आती है। रोगी का उपचार रोग के लक्षण देखने के बाद किया जाता है। उसके रोग के लक्षण और कारण जान लेने के बाद ही उपचार की प्रक्रिया आरम्भ की जाती है। साथ ही उसको कुछ परहेज़ भी बताए जाते हैं। अगर दवा ली जाए और परहेज़ की ओर ध्यान न दिया जाए तो स्वस्थ होने की प्रक्रिया बढ़ जाएगी और शायद रोगी पूर्णत: स्वस्थ भी नहीं हो पाएगा।

बच्चे स्कूल से पढ़कर वापस अपने घर आते हैं। अपना भारी बस्ता उठाए, थके-माँदे, घर के अन्दर प्रवेश करते ही बस्ता इधर-उधर फेंक देते हैं और आवाज़ लगाते हैं– मम्मी, मैं थक गया हूँ। बहुत भूख लगी है, प्यास लगी है इत्यादि-इत्यादि।

मम्मी भी कहती है– बेटा बाहर से आए हो, मुँह-हाथ धो लो परन्तु कुछ बच्चे नहीं मानते और खाना उसी स्थिति में ही खा लेते हैं। इस तरह कई बार बड़े भाई-बहन, मित्र और परिवार के सदस्य भी ऐसा कर बैठते हैं। यहीं से अस्वस्थ होने के कारणों से समझौता शुरू हो जाता है और हम गलत आदतों का संग्रह स्वयं कर लेते हैं। यही आदतें हमारे बीमार होने का कारण बनती हैं।

कुछ आदतें अच्छी भी होती हैं जैसे ईमानदारी, सच्चाई और सफाई। ये आदतें हमारे व्यक्तित्व का विकास करने में सहायता करती हैं।

अच्छी बात सबको अच्छी लगती है परन्तु इसी बात को किसी को अपमानित करने या उसका उपहास उड़ाने के लिए कही जाएगी तो अच्छाई भी बुराई में बदल जाएगी। इसलिए हमें ऐसे जीना है जिससे कि हम दूसरे के दिल को प्यार की भावना से छू सकें। इसी से ही हम अपने व्यक्तित्व को ऊँचा उठा सकते हैं।

इसके साथ ही हमें सफाई की ओर भी पूरा ध्यान देना है। सफाई शरीर के लिए आवश्यक है। हम रोज़ स्नान करते हैं, दांत साफ करते हैं, साफ कपड़े पहनते हैं, यह हमारी दिनचर्या का हिस्सा है। अगर हम यह न करें तो शरीर से दुर्गन्ध आएगी और स्वास्थ्य भी बिगड़ जाएगा।

शरीर का स्वास्थ्य तो उपचार से, परहेज़ से ठीक किया जा सकता है परन्तु हमारे विचारों का स्वस्थ होना और भी आवश्यक है। हमारे अनुचित विचार जिसमें वाद-विवाद, एक-दूसरे से तुलना करना, अनावश्यक उपहास, उपेक्षा, तिरस्कार, नीचा दिखाना आदि हमारे मनोरोग का मुख्य कारण बनते जा रहे हैं। इन्हीं से हमें सावधान रहना है। कोई भी विचार मन में आए तो पहले उसका अवलोकन करें। फिर सोचें कि इसकी आवश्यकता है भी या नहीं। निरपेक्ष होकर देखेंगे तो अवश्य ही अनुचित विचार अपने-आप समाप्त होने शुरू हो जाएंगे।

चाहे खान-पान हो या आचरण, विचार और व्यवहार हो हमें हमेशा जागरूक रहने की आवश्यकता है। जैसे एक बच्चा पैदा होता है तो उसके माता-पिता समय आने पर उसका टीकाकरण करवाना आरम्भ कर देते हैं ताकि बच्चे को आने वाले समय में कभी भी कोई बीमारी न हो और वह स्वस्थ रहे।

आईए, अपना टीकाकरण स्वयं करें जिसमें हमारा हर विचार और भावना, विवेक के माध्यम से ही आए। हमारी यही सावधानी और परहेज़ हमारी योग्यता, मजबूती और ताकत सिद्ध होगी।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी !!!

पद संख्या : 188

धृगाकार है ओहनां ताईं जो वी कुफ़र कमावणगे।
सच ना जेकर दिल विच वसया पाक किवें हो जावणगे।
धृगाकार है उस जीवन नूं पावे ना जो रब्बी दात।
सुक सड़ जांदी है ओह खेती होवे ना जित्थे बरसात।
धृगाकार है शूम दी दौलत जो ना वरती जा सक्के।
धृगाकार है सुन्दर तन ते पीय नूं जो ना भा सक्के।
धृगाकार है ओन्हां नूं जो अन्दरों बाहरों गंदे ने।
साध शरन जो आ ना सक्कण भाग उन्हां दे मंदे ने।
जिन्हां नूं चा रब वेखण दा वड्डे भागां वाले ने।
अवतार जिन्हां नूं सत्गुर लभ्भा रहमत गोदी पाले ने।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि परमात्मा को न मानना और इसकी सत्ता को स्वीकार न करना कुफ्र (नास्तिकता) है। उनको धृगाकार है जो नास्तिकता की बात करके कुफ्र अर्जित करते हैं। प्रभु को दिल में न बसाकर ऐसे लोग सोचते हैं कि वे इस तरह व्यर्थ की बातें करके पवित्र हो जायेंगे लेकिन ऐसा सम्भव नहीं है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि जो इन्सान व्यर्थ की बातों में ही उलझा रहता है और ईश्वरीय दात अर्थात् परमात्मा का ज्ञान प्राप्त नहीं करता, ऐसे जीवन को धृगाकार है। जिस प्रकार बरसात न होने और प्रचंड गर्मी होने पर खेती सूख जाती है, उसी प्रकार इन्सान के जीवन में परमात्मा का ज्ञान न होने पर उसका जीवन भी सूखने लग जाता है। वह रसहीन हो जाता है। संसार में अनेक बातों के लिए धृगाकार कहा गया है जैसे कि किसी कंजूस व्यक्ति के पास कितना भी धन क्यों न हो वह उसका उपयोग नहीं करता इसलिए कंजूस की दौलत को भी धृगाकार कहा गया है।

बाबा अवतार सिंह जी समझा रहे हैं कि जिनके मन गंदे हैं, जिनकी सोच-विचार शुद्ध नहीं है, जो अन्दर-बाहर से गंदगी का रूप बने हुए हैं, जो सन्त की शरण में आकर अपना तन, मन निर्मल नहीं करते तो ऐसा समझना चाहिए कि उनके भाग्य ही खराब हैं। जिन्हें परमात्मा के दर्शन करने की चाह है, जो इस हरि अविनाशी को अंग-संग मौजूद देखना चाहते हैं, वे भाग्यशाली हैं। जिन्हें सद्गुरु का संग प्राप्त हो जाता है वही सद्गुरु की गोद का आनन्द लेते हैं। सद्गुरु की गोद ऐसी है जहाँ कोई ग़म, कोई पीड़ा नहीं है, जहाँ पल-प्रतिपल आनन्द ही आनन्द है। इसलिए इन्सान तू व्यर्थ की बातें त्याग कर सद्गुरु की शरण में आ जा और इस प्रभु-परमात्मा के दर्शन करके अपना भाग्य संवार ले।

संग्रहकर्ता :
प्रियंका चोटिया 'आंचल'

अनमोल वचन

★ शिक्षाप्रद बात बच्चे की भी मानो।

★ अपनी योग्यता पर विश्वास न करने वाला सदैव भयभीत रहता है।

★ हारने का विचार भी मन में लाओगे तो निश्चित ही हार जाओगे।

★ श्रेष्ठता का अर्थ सफल होने से नहीं, बल्कि सफलता को आदत बना लेने से है।

★ दुर्भाग्य उन्हें नहीं छलता, जिन्हें सौभाग्य धोखा नहीं देता।

★ जैसे हीरा रोशनी के सामने चमक उठता है। ठीक वैसे ही मनुष्य पुस्तकों के सम्पर्क में आकर ज्ञानपुंज बन सकता है।

★ सफलता साहस की संतान है।

★ शिक्षा की जड़ें भले ही कड़वी हों, परन्तु उसके फल मीठे ही होंगे।

★ न तो संसार में तुम्हारा कोई मित्र है, न ही कोई शत्रु। तुम्हारा अपना व्यवहार ही शत्रु या मित्र बनाने का उत्तरदायी है।

★ दो बातों को प्रकट कर देना चाहिये, अपने अवगुण और दूसरों के गुण।

★ ज्ञान में पूंजी लगाने से फलती-फूलती है।

★ एक अच्छी माता सौ शिक्षकों के बराबर होती है इसलिए उसका हर हालत में सम्मान करना चाहिए।

★ कोई भी बात कहने से पहले हमें एक बार शुद्ध मन से अवश्य सोचना चाहिए कि हम जो बात अपने मुख से निकाल रहे हैं उसका परिणाम अच्छा रहेगा या बुरा।

★ जो इन्सान, अपनी जरूरतों (इच्छाएं) सीमित कर सादगी जैसा आचरण व सरल स्वभाव के साथ जीवन जीता है वह सदा सुखी रहता है।

★ कठिन परिस्थितियों में समझदार आदमी रास्ता खोजता है और कमजोर आदमी बहाना।

★ जीवन को सही दिशा देने के लिए सही ज्ञान होना जरूरी है।

★ सफलता का आधार है सकारात्मक सोच और निरंतर प्रयास।

★ दुनिया में कोई काम असम्भव नहीं, बस हौसला और मेहनत की जरूरत है।

★ क्रोध वह हवा है जो बुद्धि के दीप को बुझा देती है।

★ आपका भविष्य उससे बनता है जो आप आज करते हैं, उससे नहीं जो आप कल करेंगे।

★ दुनिया में सिर्फ माता-पिता ही ऐसे हैं जो बिना किसी स्वार्थ के प्यार करते हैं।

★ विश्वास बनाने में सालों लगते हैं, तोड़ने में एक क्षण और उसे पुनः प्राप्त करने में पूरा जीवन बीत जाता है।

★ प्रार्थना आदमी की सबसे बड़ी शक्ति है।

★ अच्छा स्वास्थ्य और अच्छी समझ दोनों जीवन के सबसे बड़े आशीर्वाद हैं।

★ गलती कर देना मामूली बात है, पर उसे स्वीकार कर लेना बड़ी बात है।

★ दूसरों को क्षति पहुँचाकर अपनी भलाई की आशा नहीं करनी चाहिए।

बाल कविता : रूपनारायण काबरा

जल ही जीवन है

जल संरक्षण को अपनाओ,
जल संकट से धरा बचाओ।

जल को यदि बर्बाद करोगे,
पानी की पीड़ा भोगोगे।

पानी माता और पिता है,
जल बिन जीवन एक चिता है।

जल में जीवन, जीवन में जल,
बूंद बचाओ सब हर पल।

जल को यदि बर्बाद करोगे,
रोओगे पछताओगे।

धरती बंजर हो जायेगी,
घोर मुसीबत आ जायेगी।

जल से पृथ्वी पशु-**पक्षी सब,**
और आदमी भी **जीता है।**

प्यास जीव की जल **से बुझती,**
प्यास लगे तो जल **मीत है।**

जल को रखो शुद्ध हमेशा,
है कुदरता का यह संदेश।

गंदा जल बीमार करेगा,
बीमारी से सभी मरेगा।

कूड़ा करकट और गन्दगी ने,
दूषित सब कुछ कर डाला।

गंगा मैया तक के पानी,
को भी मैला कर डाला।।

आलेख : अर्चना सौगानी

गर्मियों में सेहत के रखवाले : सूती परिधान

चिलचिलाती गर्मियों में कॉटन परिधान हमारे शरीर को सचमुच नया लुक देते हैं लेकिन यह शरीर को गर्मी के प्रकोप से भी बचाते हैं। ये परिधान त्वचा को प्राकृतिक ठण्डक प्रदान करते हैं।

कॉटन बिल्कुल एयरकंडीशनर की तरह है। शरीर के अनुकूल, मौसम के अनुकूल। यूं तो यह त्वचा को एलर्जी से भी बचाता है यानी स्वास्थ्य के अनुकूल भी होता है। हाँ, जो लोग अस्थमा से पीड़ित होते हैं, उनके लिए कॉटन खासतौर पर फायदेमंद होता है क्योंकि कॉटन कृत्रिम रसायनों, पेट्रो उत्पादों से नहीं बनता। इसलिए कॉटन में किसी तरह की एलर्जी का खतरा नहीं होता है।

गर्मियों में पसीने की दुर्गन्ध से बचने के लिए अपने पहनावे पर भी विशेष ध्यान दें। शरीर से चिपकने वाले कपड़े न पहनें, न ही गीले व मैले कपड़े पहनें, जीवाणुओं के प्रभाव से ये अधिक दुर्गन्धयुक्त हो जाते हैं। अतएव सूती तथा ढीले वस्त्र पहनें ताकि पसीना हवा में उड़ता रहे।

गर्मियों में सिन्थेटिक परिधानों को न पहनें क्योंकि इन्हें पहनने से पसीना अधिक आता है। ऐसे कपड़ों से शरीर तक हवा नहीं पहुँच पाती। जहाँ तक सम्भव हो हल्के रंग के सूती कपड़े ही पहने, गहरे रंग के कपड़ों में गर्मी ज्यादा लगती है। अन्दर पहने जाने वाले वस्त्र भी सूती कपड़े के बने हों तथा रोज धुले हुए ही पहनें।

पहने हुए मैले व गीले वस्त्रों को यूं ही उतारकर अलमारी में न रखें क्योंकि पसीने से गीले वस्त्रों पर जीवाणु अतिशीघ्र आक्रमण करते हैं जिसके परिणामस्वरूप दुर्गन्ध उत्पन्न होती है। अत: गर्मियों में हमेशा साफ स्वच्छ, धुले हुए कपड़े ही पहनें, उन्हें बिना धोए कभी भी अलमारी में न रखें।

पसीने को कभी भी हाथ से साफ न करें। पसीना पोंछने के लिए स्वच्छ सूती कपड़े या रूमाल का प्रयोग करें।

आओ इनसे सीखें

घड़ी से – समय की कद्र करना।
समुद्र से – विशाल दिल रखना।
चींटी से – निरंतर कर्म करते रहना।
वृक्ष से – परोपकारी बनना।
धरती से – सहनशील बनना।
गुलाब से – दुःख में भी खुश रहना।
सूर्य से – सब को प्रकाशित करना।
दीपक से – रोशनी फैलाना।
कुत्ते से – वफ़ादार बने रहना।
कोयल से – हमेशा मीठा बोलना।

– सुमेश कुमार (लखनऊ)

समाचार

अब ध्वनि तरंगों से लगाए जा सकेंगे टांके

आपने दर्जी को कपड़े सिलते समय अथवा डॉक्टर को घाव को बंद करने के लिए टांके लगाते समय तो देखा होगा, लेकिन क्या आप इस बात पर यकीन करेंगे कि ध्वनि तरंगों से भी टांके लगाए जा सकेंगे?

वैज्ञानिकों के मुताबिक, ध्वनि तरंगों में भी ताकत होती है। जब इनकी पिच बहुत अधिक होती है तभी इंसानों को सुनाई देती है। इसकी मदद से न केवल कपड़े सिले जा सकेंगे, बल्कि ऑपरेशन के बाद घावों को बंद करने में भी इसकी मदद ली जा सकेगी।

ब्रिटेन की यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिस्टल के प्रोफेसर ब्रूस ड्रिंकवाटर के मुताबिक, इस तकनीक को कई तरह से इस्तेमाल कर सकते हैं। वह कहते हैं कि हमने 256 छोटे लाउडस्पीकरों की ध्वनि को नियंत्रित करने के लिए एल्गोरिदम का प्रयोग किया है। इससे हमने इस जटिल प्रक्रिया को आसान बना लिया। इससे बहुत आसानी से ध्वनिक क्षेत्र बन गया। वहीं स्पेन की पब्लिक यूनिवर्सिटी नवरे के असीर मार्जो के अनुसार, ध्वनिक चिमटी 2018 में नोबेल पुरस्कार जीतने वाली ऑप्टिकल चिमटी की तरह ही है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि ध्वनिक उपकरण ऑप्टिकल सिस्टम की तुलना में एक लाख गुना अधिक शक्तिशाली होते हैं। ध्वनि की ताकत को जरूरत के मुताबिक घटा और बढ़ाकर अलग-अलग जगहों पर इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। इसकी ताकत से छोटी चीजों को एक जगह से दूसरी जगह पर स्थानांतरित करने में मदद ली जा सकेगी। शोधकर्ताओं के अनुसार, इससे हम कह सकते हैं कि हमें अब कई हाथ मिल गए हैं। यह तकनीक बहुत उपयोगी रहेगी।

इसमें दो मिलीमीटर पॉलिस्टीरीन धागा एक टुकड़े से जुड़ा हुआ है। ध्वनिक चिमटी के जरिये टुकड़े में लगे धागे से किसी की भी सिलाई कर सकते हैं। इसे हवा में तीन स्थानों से नियंत्रित किया जाता है और 25 बार चलाया जा सकता है।

प्रस्तुति : डॉ. विनोद गुप्ता

कनिष्क ने सिविल सर्विसेज में टॉप किया

नई दिल्ली। राजस्थान के कनिष्क कटारिया 'सिविल सर्विसेज मेन एग्जामिनेशन 2018' के टॉपर बने हैं। मध्य प्रदेश की सृष्टि जयंत देशमुख लड़कियों में टॉपर है और यूपीएससी की मेरिट लिस्ट में उन्होंने पांचवी रैंक हासिल की है। दूसरी रैंक राजस्थान के ही अक्षत जैन को मिली है। वहीं तीसरे नंबर पर उत्तर प्रदेश के जुनैद अहमद रहे।

– संकलन : बबलू कुमार

प्रेरक-प्रसंग : राधा नाचीज़

सबसे महान कौन?

एक बार नारद के मन में यह जानने की इच्छा हुई कि सबसे महान कौन है? इसलिए वे ब्रह्माजी के पास गए और उन्होंने ब्रह्माजी से यही प्रश्न किया।

ब्रह्माजी ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया– नारद! सबसे बड़ी तो यह पृथ्वी दिखती है इसलिए हम पृथ्वी को सबसे बड़ो की संज्ञा दे सकते हैं, मगर समुद्र ने उसे घेर रखा है। इस कारण समुद्र उससे भी बड़ा रहा। किन्तु इस समुद्र को भी अगस्त्य मुनि ने पी लिया था, इस कारण समुद्र कैसे बड़ा हो सकता है? तब तो अगस्त्य मुनि सबसे बड़े हुए। मगर उनका भी वास कहाँ है? अनन्त आकाश में मात्र एक जुगनू की तरह चमक रहे हैं इसलिए आकाश उनसे भी बड़ा हुआ। लेकिन वामनावतार में भगवान विष्णु ने इस आकाश को भी एक ही पग में नाप लिया था, इस कारण विष्णु ही सर्वोपरि महान सिद्ध होते हैं। फिर भी नारद विष्णु भी सर्वाधिक महान नहीं है क्योंकि वे तुम्हारे जैसे भक्त के हृदय में अंगुष्ठमात्र स्थल में ही सर्वदा देखे जाते हैं। इसलिए जिनके हृदय में भगवान वास करते हैं, सबसे महान तो भक्त ही हैं।

प्रेरक-प्रसंग : कमला देवड़ा

पारस

एक सिद्धपुरुष के पास एक पारस-पत्थर था। एक शिष्य उसे हथियाना चाहता था। पत्थर छिपाकर रखा हुआ था। जब उसे देने का समय आया तो गुरुजी ने उसी शिष्य से एक सीलबंद पेटी लाने को कहा। शिष्य उसे उठा लाया। पारस-पत्थर उसी में था।

चाबी न मिलने पर ताला तोड़ने का प्रयास होने लगा।

शिष्य ने सन्देह व्यक्त करते हुए कहा– यदि इसमें पारस होता तो लोहे की पेटी कब की सोने की हो जाती।

गुरुजी कुछ नहीं बोले– ताला तोड़कर पारस को निकाला। वह कपड़े में लिपटा हुआ था। पारस और पेटी के बीच यह कपड़ा उसे सोना नहीं बनने दे रहा था।

तभी शिष्यों को समझाते हुए गुरुजी बोले– भक्त और भगवान, गुरु व शिष्य के बीच यह स्वार्थ का कपड़ा भी व्यवधान खड़ा करता है। यदि इसे हटा दिया जाये तो भक्त और शिष्य को सोना बनने में (निखरने में) देर नहीं लगेगी।

प्रेरक-प्रसंग : राधेलाल 'नवचक्र'

दुश्मन बने दोस्त

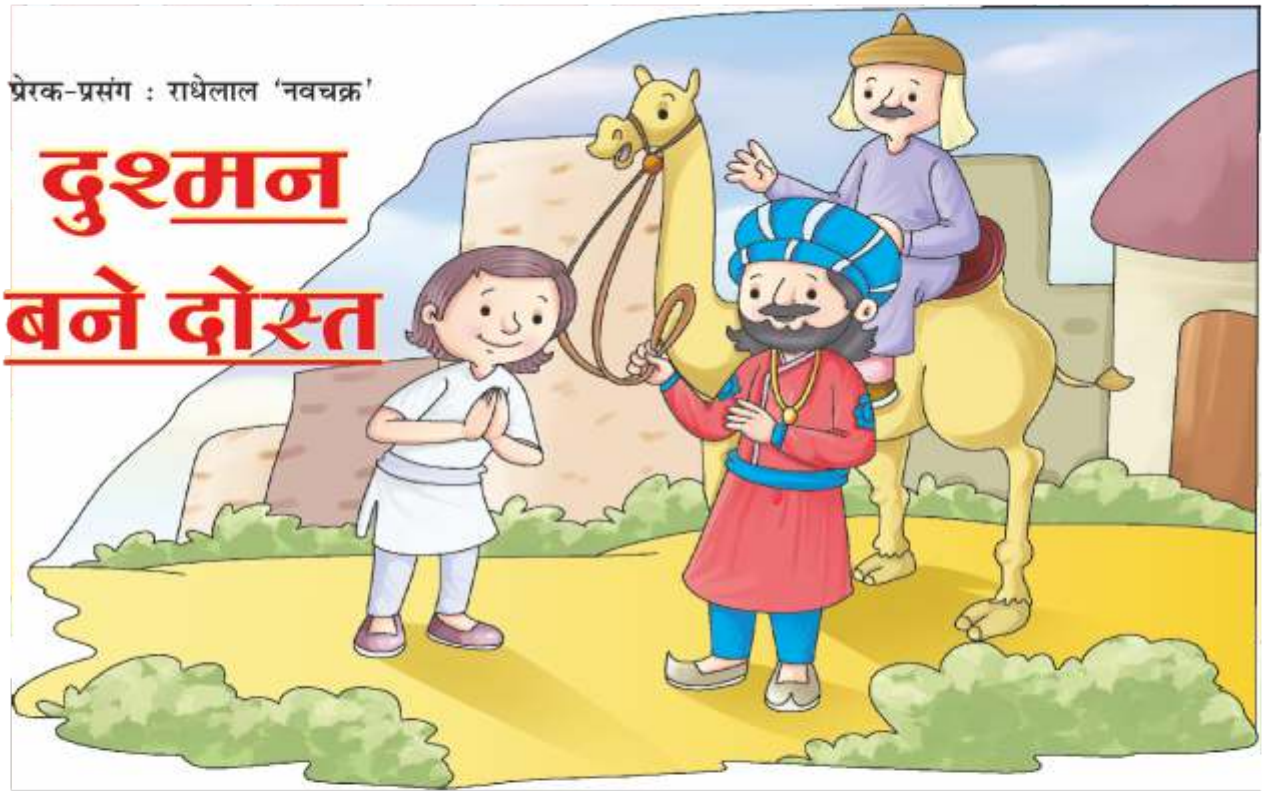

लम्बे समय के बाद हजरत उमर एक ऐसे बादशाह की राजधानी में पहुँचे जिससे बरसों से उनका मन-मुटाव चल रहा था। जब वे वहाँ पहुँचे तो संयोग ऐसा था कि ऊँट की पीठ पर उनका गुलाम बैठा था और वे ऊँट की नकेल पकड़े हुए नीचे खड़े थे।

बादशाह के वजीर ने ऊँट पर सवार गुलाम को ही हजरत उमर समझकर उन्हें सलाम करने गए तो गुलाम ने घबराकर कहा– बादशाह हजरत उमर तो ऊँट की नकेल पकड़े हैं। मैं तो उनका एक साधारण-सा गुलाम हूँ।

यह सुनकर सबको हैरानी हुई। सच्चाई क्या है? सबने जानना चाहा।

हजरत उमर ने रहस्य खोला। बात एकदम सीधी-सी है। हम लोग लम्बे सफर से आ रहे हैं। प्रत्येक चार कोस पर कभी मैं और कभी मेरा गुलाम ऊँट की पीठ पर सवार होकर चलते आए हैं। जब मैं सवार होता, ऊँट की नकेल गुलाम के हाथ में और जब वह सवार रहता तो ऊँट की नकेल मेरे हाथ में होती। इस समय बारी थी गुलाम की इसलिये ऊँट की नकेल मेरे हाथ में है।

जब यह खबर बादशाह के कानों में पहुँची तो वह भी चकित रह गए। फिर उसने आकर उनका बहुत सम्मान करते हुए कहा– जो बादशाह अपने गुलाम के साथ इतनी आदमियता का सलूक करता है, भला उससे मेरी कैसी लड़ाई। आज से आप मेरे उस्ताद हैं और मैं हूँ आपका शागिर्द।

उसी दिन से दोनों की लड़ाई खत्म हो गयी और दुश्मन बन गए दोस्त।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

किसी शहर में एक लड़का रहता था। नाम था उसका विनय। पशु-पक्षियों एवं लोगों को परेशान करना, रास्ते चलते हुए जानवरों को पत्थर मारना, न जाने इस तरह की कितनी ही बुरी आदतें थी उसमें।

गर्मी की छुट्टियां होने पर, विनय के मम्मी पापा ने उसे नाना जी के पास गाँव भेज दिया।

वहाँ जाते ही विनय ने अपनी शैतानियां करनी शुरू कर दी। रोज लोग शिकायतें लेकर नाना जी के पास पहुँच जाते।
नाना जी, विनय को अपने पास बुलाकर प्यार से समझाते। वह कान पकड़ कर माफी भी मांगता लेकिन थोड़ी देर बाद ही सब कुछ भूल कर फिर शैतानियां करने लगता।
उसे समझाने के लिए नाना जी एक दिन उसे अपने खेत में ले गये। वहाँ जाकर उन्होंने विनय से एक छोटा पौधा उखाड़ने के लिए कहा।

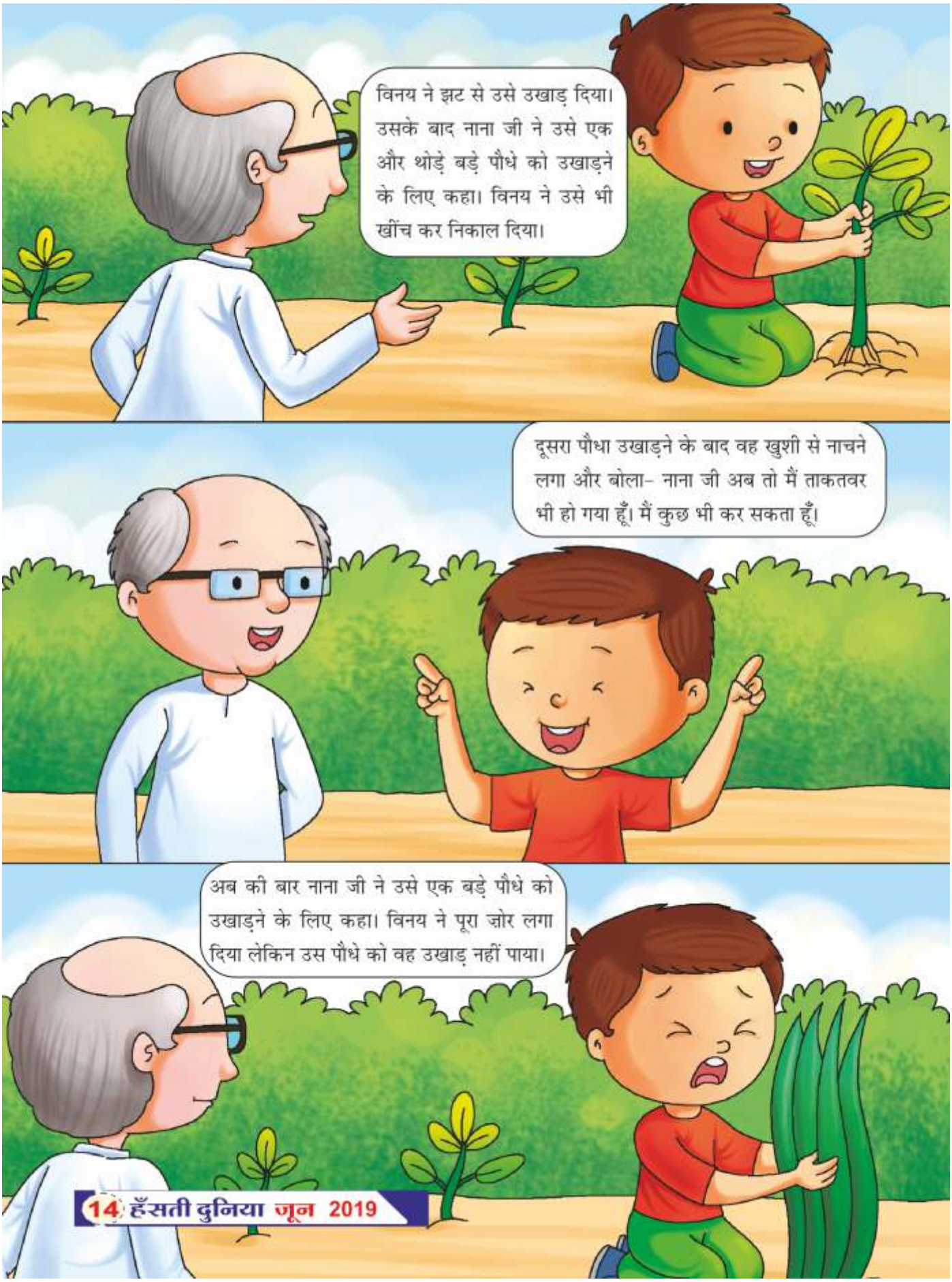
विनय ने झट से उसे उखाड़ दिया। उसके बाद नाना जी ने उसे एक और थोड़े बड़े पौधे को उखाड़ने के लिए कहा। विनय ने उसे भी खींच कर निकाल दिया।
दूसरा पौधा उखाड़ने के बाद वह खुशी से नाचने लगा और बोला– नाना जी अब तो मैं ताकतवर भी हो गया हूँ। मैं कुछ भी कर सकता हूँ।
अब की बार नाना जी ने उसे एक बड़े पौधे को उखाड़ने के लिए कहा। विनय ने पूरा ज़ोर लगा दिया लेकिन उस पौधे को वह उखाड़ नहीं पाया।

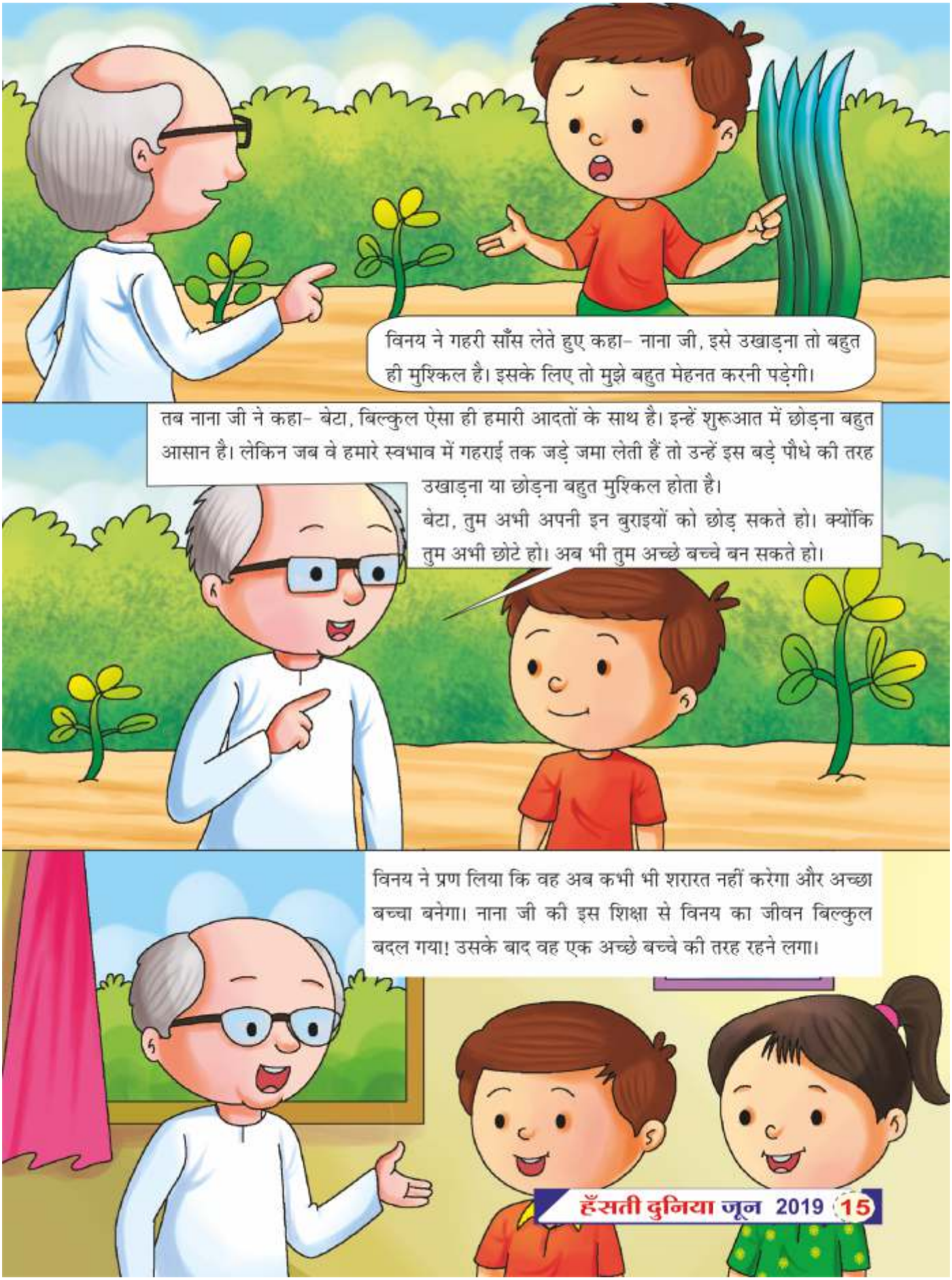
विनय ने गहरी साँस लेते हुए कहा- नाना जी, इसे उखाड़ना तो बहुत ही मुश्किल है। इसके लिए तो मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ेगी।
तब नाना जी ने कहा- बेटा, बिल्कुल ऐसा ही हमारी आदतों के साथ है। इन्हें शुरूआत में छोड़ना बहुत आसान है। लेकिन जब वे हमारे स्वभाव में गहराई तक जड़े जमा लेती हैं तो उन्हें इस बड़े पौधे की तरह उखाड़ना या छोड़ना बहुत मुश्किल होता है।
बेटा, तुम अभी अपनी इन बुराइयों को छोड़ सकते हो। क्योंकि तुम अभी छोटे हो। अब भी तुम अच्छे बच्चे बन सकते हो।
विनय ने प्रण लिया कि वह अब कभी भी शरारत नहीं करेगा और अच्छा बच्चा बनेगा। नाना जी की इस शिक्षा से विनय का जीवन बिल्कुल बदल गया! उसके बाद वह एक अच्छे बच्चे की तरह रहने लगा।

ऐतिहासिक नाटक : अमित गुप्ता

भारत की वीरांगनाएं

–पात्र परिचय–

अरिसिंह : चित्तौड़ के महाराणा लक्ष्मण सिंह के ज्येष्ठ पुत्र

मित्रगण व कुछ सैनिक

वीर कन्या : भविष्य की हम्मीर माता

प्रथम दृश्य

स्थान : जंगल।

चित्तौड़ के महाराणा लक्ष्मण सिंह के ज्येष्ठ पुत्र अरिसिंह शिकार के लिए जंगल में आए हैं। एक जंगली सूअर को देखकर अपने मित्रों के साथ घोड़े पर सवार हो उसका शिकार करने हेतु पीछा कर रहे हैं। सूअर अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए पास के ही बाजरे के खेत में लुप्त हो जाता है। इस बाजरे के घने खेत की रक्षा एक सुन्दर पराक्रमी बालिका कर रही है। अरिसिंह व उनके मित्रगणों को देखकर बालिका मचान से उतरकर उनके सामने खड़ी हो जाती है।

बालिका : (श्रद्धा से) प्रणाम राजकुमार! आपका यहाँ पधारने का प्रयोजन मैं भली-भांति समझती हूँ। आप लोग जंगली सूअर को मारकर ले जाना चाहते हैं न! यदि आप लोग अपने घोड़ों सहित मेरे खेत में प्रवेश करेंगे तो हमारी खेती नष्ट हो जाएगी। अतः आपसे निवेदन है कि आप यहीं कुछ देर तक प्रतिक्षा करें, मैं अभी जाकर सूअर को मारकर ला देती हूँ।

एक मित्र : (आश्चर्य से) भला तुम उस जंगली सूअर को कैसे मार सकोगी? तुम्हारे पास तो कोई शस्त्र भी नहीं है?

बालिका : (एक कंटीले पेड़ की शाखा को तोड़कर तेज करती हुई) कुछ देर बाद आपको प्रमाण मिल जाएगा। कुछ देर तक आप प्रतिक्षा करें।

(सभी एक-दूसरे को कौतूहलवश निहार रहे हैं। कुछ देर बाद बालिका सूअर को मारकर ले आती है। वह अरिसिंह के समक्ष रखती हुई बोली।)

बालिका : यह रहा आपका शिकार राजकुमार।

(सभी आश्चर्यचकित थे। वहाँ से थोड़ी दूर अरिसिंह जंगल में अपने पड़ाव पर पधारे। सभी स्नान कर रहे हैं। अचानक एक पत्थर आकर उनके घोड़े को लगता

है और परिणामस्वरूप घोड़े का पैर टूट जाता है। यह पत्थर उसी वीर बालिका ने फेंका था। खेत में पक्षियों को उड़ाने हेतु। अरिसिंह के घोड़े की दशा देख वह बालिका वहाँ माफी मांगने आई।)

बालिका : राजकुमार जी, मुझे क्षमा कर दें। अनजाने में मेरे द्वारा पक्षियों को उड़ाते हुए आपका घोड़ा घायल हो गया है। आप चाहें तो इसके लिए मुझे दंड दे सकते हैं। मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

अरिसिंह : (मुस्कुराते हुए) हे देवी, तुम्हारा साहस व अद्‌भुत शक्ति देखकर मैं आश्चर्यचकित हूँ। मैं तुम्हें इसके लिए उपहार देना चाहता था परन्तु मुझे दुःख है कि इस समय तुम्हें पुरस्कार देने के लिये मेरे पास तुम्हारे योग्य कोई भी वस्तु नहीं है।

बालिका : (विनम्रता से) राजकुमार मुझे किसी भी प्रकार के पुरस्कार की इच्छा नहीं है। आप अपनी प्रजा का हर प्रकार से ध्यान रखें। उनके दुख-सुख में उनका साथ दें यही मेरे लिए सबसे बड़ा व अनमोल उपहार होगा।

(यह कहकर वह वीर बालिका राजकुमार को प्रणाम कर वहाँ से प्रस्थान कर गई।)

दूसरा दृश्य

(गोधूली का समय है। राजकुमार अरिसिंह व उनके मित्रगण घोड़े पर सवार हो भ्रमण कर रहे हैं। अरिसिंह ने देखा कि वही वीर बालिका सिर पर दूध की मटकी रखे अपने साथ अपनी दो गायों को ले जा रही है और हाथों में एक रस्सा है।)

एक मित्र : इस बालिका में इतना शौर्य! यकीन नहीं होता। क्यों न इसके सिर पर रखी मटकी को गिरा दिया जाए। फिर देखें यह क्या करती है?

(वह जैसे ही इस इरादे से आगे बढ़ा उस बालिका ने उसका इरादा भांप लिया और अपने हाथ में पकड़ी हुई रस्सी घुड़सवार पर फेंककर इस प्रकार झटका

मारा कि वह घुड़सवार घोड़े पर से गिर पड़ा।)

बालिका : (समझाते हुए) कभी किसी को हानि पहुँचाने की सोचना नहीं, नहीं तो गिर पड़ोगे।

एक मित्र : तुम्हारा शौर्य अद्भुत है।

अरिसिंह : देखा मित्र, यह बालिका साधारण कन्या नहीं है। इसका साहस व शौर्य अनुपम है; अनूठा है। इस बालिका के घर का पता लगाना चाहिए।

सैनिक : राजकुमार, यह एक क्षत्रिय कन्या है।

अरिसिंह : (प्रसन्नता से) बहुत उत्तम! क्षत्रिय कन्या!! क्षत्रिय शौर्य!!! हमें इस बालिका के पिता से बात करनी होगी।

(इसके बाद राजकुमार अरिसिंह ने उस बालिका के पिता से विवाह के लिए आज्ञा मांगी और वही

बालिका एक दिन चित्तौड़ की महारानी हम्मीर माता के नाम से प्रसिद्ध हुई। हम्मीर माता ने सुप्रसिद्ध राणा हम्मीर को जन्म दिया।)

प्रस्तुति : प्रवीण कुमार

लू से बचने के उपाय

गर्मियों में सबसे बड़ा खतरा लू लगने का होता है। इससे बचाव ही इसका उपचार है।

- ★ खाली पेट न रहें।
- ★ पानी अधिक पिएं।
- ★ सिर व कानों को ढक कर रखें।
- ★ यदि छाता हो तो उसका भी प्रयोग करें।
- ★ ककड़ी, प्याज, मौसमी, मूली, दही, मठा, पुदीना, चना का उपयोग करें।
- ★ लू से बचने के लिए दोपहर के समय बाहर नहीं निकलना चाहिए। अगर बाहर जाना ही पड़े तो सिर व गर्दन को तौलिए या अंगोछे से ढक लेना चाहिए। अंगोछा इस तरह बांधा जाए कि दोनों कान भी पूरी तरह ढक जाएं।

अगर लू लग जाए तो उससे निपटने के पारंपरिक उपचार हैं–

- ★ अपनी नाभि पर खड़ा नमक रखें और उस पर पानी की धार बनाकर डालें। अगर लू लगी होगी तो नमक के टुकड़े हो जाएंगे।
- ★ अपनी अंगुलियों पर इमली के बीज पीसकर लगाने से भी लू से छुटकारा मिलता है।
- ★ प्याज का रस हथेलियों और पैर के तलवों पर लगाएं।
- ★ कैरी का पना पुदीना पत्ती डालकर लगातार पियें।
- ★ गीला कपड़ा बार-बार चेहरे पर रखें और कपड़े को बार-बार बदलें।
- ★ गर्मी के दिनों में हल्का व शीघ्र पचने वाला भोजन करना चाहिए।
- ★ पानी में नींबू व नमक मिलाकर दिन में दो-तीन बार पीते रहने से लू नहीं लगती।

दो बाल कविताएं : रामअवध राम

निकला सूरज

निकला सूरज पूरब से,
लाल-लाल किरणें आई।
दूर हुआ अंधेरा सारा,
चहुँ दिशि उजियारी छाई।।

पेड़ों की डाली-डाली पर,
चिड़ियां शोर मचाई।
कुकड़ू कू मुर्गा बोले,
कूँ कूँ कोयल गाई।।

फूल खिले भौंरे गाते,
कली-कली मुस्काई।
शीतल मंद सुगन्ध पवन,
नई ताजगी लाई।।

जाग कर सारी दुनिया,
काम पर अपने धाई।
बच्चों जागो नींद को त्यागो,
आलस छोड़ करो पढ़ाई।।

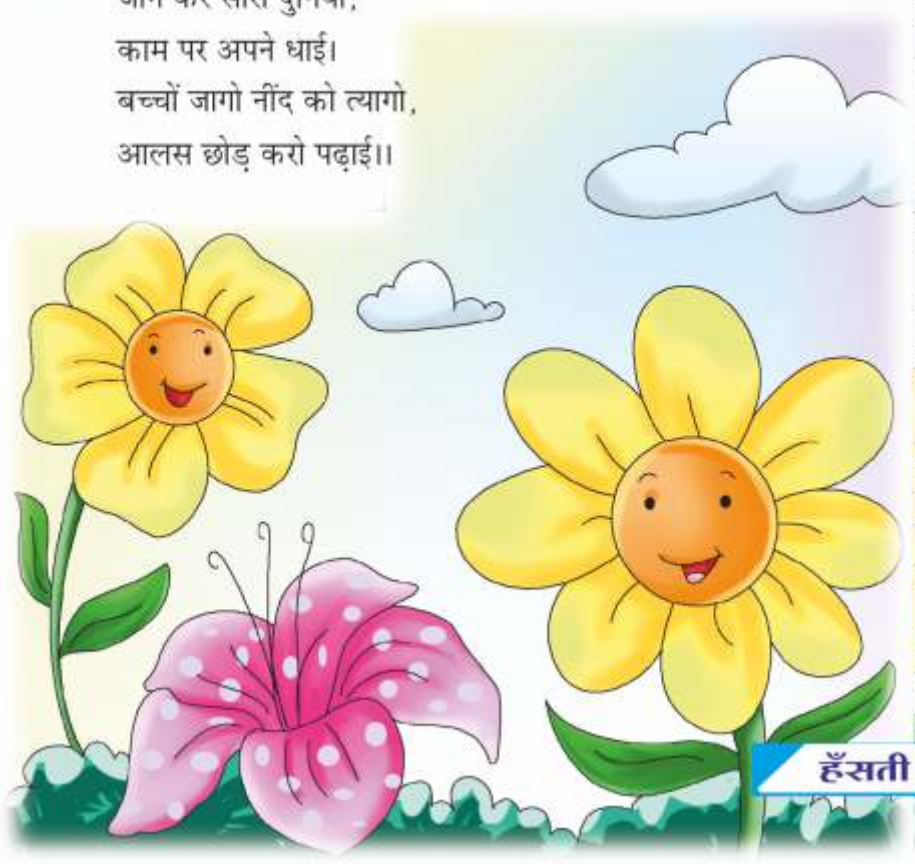

फूल मनोरम

रंग-रंग के फूल मनोरम
बगिया में मुस्काते हैं।
मनमोहक महक से अपनी,
सबको खुश कर जाते हैं।।

मीठा पराग भौंरों को देते,
भौंरे गुन-गुन गाते हैं।
बहुरंगी तितलियों को,
अपना प्यार लुटाते हैं।।

जहाँ-जहाँ भी जाते हैं,
शोभा वहाँ बढ़ाते हैं।
काम सदा परहित का करते,
कोमल भाव बहाते हैं।।

काँटों के संग कष्ट उठाते,
मार मारुत की खाते हैं।
कभी नहीं दुःख से घबराते,
हँसते और हँसाते हैं।।

लेख : जयेन्द्र

सूर्य की पुत्री कपास

कपास से सूत और धागे बनते हैं। इन्हीं की बदौलत बड़े-बड़े कारखानों में कपड़े तैयार किये जाते हैं। कपास से बने सूती परिधान शरीर के लिए भी फायदेमंद हैं। खासकर गर्मियों में तो सूती-परिधानों की बड़ी महिमा है।

प्राचीनकाल में कपास के पौधे को लोग 'सूर्य की बेटी' की संज्ञा देते थे। इसका कारण यह था कि केवल रुई का पौधा ही सूर्य की शक्तिशाली किरणों द्वारा बढ़ता और पनपता है। आइए जानें कि कपास के पौधे को सूर्य की बेटी क्यों कहा जाता है?

दरअसल कपास के पौधों को शुरू-शुरू में जल की बहुत जरूरत होती है। यह जरूरत पौधे में फल आने तक बनी रहती है, लेकिन फल के फटते ही पौधे को तेज धूप की जरूरत होती है। यदि फल के फटने के बाद बारिश हो जाए तो कपास के फूल पूरी तरह से नष्ट हो जाते हैं।

जबकि सूर्य की गर्मी रुई के रेशे को अधिक सफेद और मजबूत बनाती है। इसी कारण कपास को सूर्य की बेटी कहा जाता है। इतना ही नहीं कपास की खेती 37 अंश उत्तर और 37 अंश दक्षिण अक्षांशों के बीच में स्थित पृथ्वी के भागों में भी इसलिए की जाती है। पूरी दुनिया में इस पट्टी के अन्तर्गत लगभग 7200 किलोमीटर की ऐसी चौड़ाई है, जिसमें कपास उगाने के लिए आवश्यक परिस्थितियां उपलब्ध हैं। इस पट्टी में अच्छी बारिश होने के साथ ही अच्छी गर्मी और अच्छा प्रकाश भी होता है।

हमारे देश के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने सूती वस्त्रों को ही प्राथमिकता दी थी। गाँधी जी खुद प्रतिदिन दो घंटे चरखे पर बैठकर सूत काता करते थे। हमारे देश का राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा' भी सूती कपड़े यानी 'खादी' का ही बना हुआ है। राष्ट्रपति भवन और लाल किले पर हर वर्ष 15 अगस्त व 26 जनवरी को खादी से निर्मित ध्वज ही फहराये जाते हैं।

सूती परिधान गर्मी में शरीर को ठण्डक प्रदान करते हैं तथा बरसात में भी उपयोगी हैं क्योंकि बरसात के दिनों वायु में नमी रहती है तथा वातावरण में उमस भी रहती है, जिससे पसीना अधिक आता है। सूती परिधान पसीना सोखकर उसे शीघ्र ही उड़ा देते हैं। इससे त्वचा रोगों से बचाव रहता है।

संग्रहकर्ता :
विभा वर्मा (वाराणसी)

क्या आप जानते हैं?

★ हमिंग बर्ड पीछे की तरफ भी उड़ सकती है।

★ सिर का हर बाल एक साल में 5 इंच बढ़ता है।

★ हिप्पोपोटामस मनुष्य से ज्यादा तेज दौड़ सकता है।

★ घोघा तीन सालों तक सो सकता है।

★ चीन ने दुनिया की सबसे बड़ी पेपर मनी 1368 में जारी की यह नोट 23 से.मी. लम्बा और 33 से.मी. चौड़ा था।

★ अंटार्कटिका को छोड़कर तितलियां हर जगह मिलती हैं।

★ हर्मिटेज म्यूजियम की मुख्य इमारत विंटर पैलेस में 1786 दरवाजे हैं तथा 1945 खिड़कियां व 1057 हॉल या कमरे हैं।

★ अफ्रीका में एक हजार से भी ज्यादा भाषाएं बोली जाती हैं।

★ हमारी पलक का बाल 150 दिनों में गिरता है और इसकी जगह दूसरा बाल आता है।

★ दुनिया का पहला रेफ्रिजरेटर यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका में 1913 में उपयोग किया गया, वह डोमिलर (DOMELRE) था।

★ दक्षिण अफ्रीका का एक इलाका है सुहेल। वहाँ के लोग मिट्टी के बने बड़े-बड़े मटकों में रहते हैं।

★ ऑस्ट्रेलिया की पिट्टा नामक चिड़िया के पंख नौ रंग के होते हैं।

★ ऑस्ट्रेलिया में काले रंग का हंस पाया जाता है।

★ टेट्रा नाम की पारदर्शी मछली संकटग्रस्त होने पर अपने आपको अदृश्य कर सकती है।

★ हाथी की सूंड में एक भी हड्डी नहीं होती है। इसका निर्माण 40,000 मांसपेशियां मिलकर करती हैं।

★ थाई देश रेड रिंगलर किस्म के केंचुए निर्यात करता है ये केंचुए प्रतिदिन अपने शरीर के भार के बराबर कचरा साफ करते हैं।

★ उड़ते समय एल्बाट्रॉस नामक चिड़िया के परों (पंखों) का फैलाव 3.63 मीटर तक हो सकता है।

★ गिद्ध लगभग 100 किलोमीटर तक की दूरी बिना पंख फड़फड़ाए ही पार कर सकते हैं।

★ अंडियन कोंडोर नामक शिकारी पक्षी का वजन 11 किलोग्राम तक होता है।

★ उत्तर ध्रुवीय कुररी चिड़िया 22530 किलोमीटर लंबी उड़ान भर सकती है।

★ हंस 8,230 मीटर की ऊँचाई पर भी उड़ सकते हैं।

★ कॉक्रोच बिना कुछ खाए-पिए महीनों तक जिन्दा रह सकते हैं।

★ ड्रैगनफ्लाई का अधिकांश जीवन उड़ते हुए बीतता है। उसे कीट जगत का हेलीकॉप्टर कहा जाता है।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

ऐसे करोगे तो मुख की दुर्गन्ध से बचे रहेंगे आप

- ★ भुनी हुई सौंफ खाने से मुख की दुर्गन्ध साफ होती है।
- ★ मुलहठी चूसने से मुख दुर्गन्ध रहित होता है।
- ★ भुना हुआ जीरा भी चूस सकते हो।
- ★ अनार के छिलकों को उबालकर उस पानी से कुल्ला करो सांस में ताजगी पाओगे।
- ★ मिश्री इलायची मिलाकर चूसने से भी दुर्गन्ध दूर होता है।

बच्चो, दरअसल शरीर के अन्य भागों की तरह हमारे मुंह में भी कुछ सूक्ष्म जीव रहते हैं इनमें से कुछ तो फायदेमंद होते हैं बाकी कुछ ऐसे होते हैं जो दांतों के आसपास इकट्ठे होकर सड़न पैदा करते हैं। अगर हम इन बैक्ट्रीयाज़ की मात्रा कम कर सकें तो दांतों को हम कई समस्याओं से खुद-ब-खुद बचा सकते हैं।

सबसे गर्म-सबसे ठंडा

दुनिया की सबसे गर्म जगह लीबिया है जो अफ्रीका महाद्वीप है। यहाँ पर छांव में भी तापमान 58 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है और पृथ्वी पर सबसे ठंडा स्थान दक्षिणी ध्रुव के पास है। यहाँ तापमान शून्य से 88 डिग्री सेल्सियस नीचे (-128.9 डिग्री फारेनहाइट) रिकॉर्ड किया गया है। ऐसे ही रात के और दिन के तापमान में सबसे अधिक अन्तर ब्राउनिंग मोन्टाना (अमेरिका) में 23 जनवरी 1916 को रिकॉर्ड किया गया। दिन में तापमान 6 डिग्री सेल्सियस था। परन्तु रात को यह गिरकर (-49) डिग्री सेल्सियस हो गया। दोनों में 55 डिग्री का अन्तर था।

W.W.W. वर्ल्ड वाइड वेब क्या है?

दुनिया के विभिन्न स्थानों पर स्थापित टेलीफोन लाईनों अथवा उपग्रहों की सहायता से एक-दूसरे के साथ जुड़े कम्प्यूटरों का नेटवर्क ही इंटरनेट कहलाता है। इस सिस्टम में कोई सेन्सरशिप नहीं है। इंटरनेट पद्धति में सम्पूर्ण सूचनाएं कम्प्यूटरों में भरी होती हैं। इन्हें ही तकनीकी भाषा में 'वेब सर्वर' कहा जाता है। ये सभी कम्प्यूटर एक-दूसरे से जुड़े होते हैं और सम्पूर्ण जाल को 'वर्ल्ड वाइड वेब' (W.W.W.) के नाम से जाना जाता है। इस पूरी प्रणाली में प्रत्येक कम्प्यूटर में निहित जानकारी को 'होम पेज' के नाम से जाना जाता है। अगर इस 'होम पेज' को एक पुस्तक, वेबसाइट को पुस्तक अलमारी और वेब सर्वर को पुस्तकालय के रूप में देखा जाए तो इंटरनेट सिस्टम को लाखों पुस्तकालयों से बनी एक विशाल लाइब्रेरी के रूप में देखा जा सकता है। ■

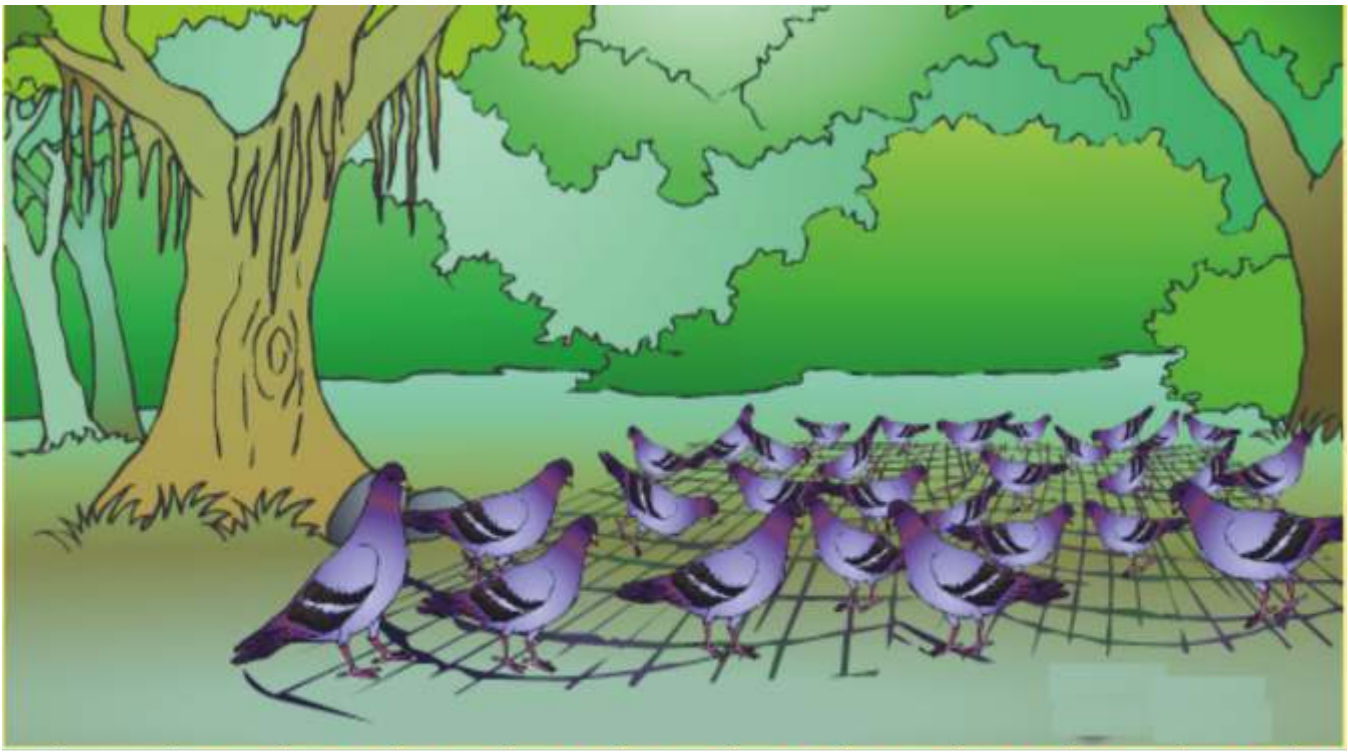

बाल कहानी : किशनलाल शर्मा

बिखराव

एक बार की बात है। एक चिड़ीमार पक्षियों को पकड़ने के लिये जंगल में गया। उसने पक्षियों को फंसाने के लिये, जमीन पर दाना डालकर जाल बिछा दिया। फिर वह दूर एक पेड़ के नीचे बैठकर पक्षियों के आने का इन्तजार करने लगा।

कुछ देर बाद आकाश में कबूतरों का झुंड नजर आया। उनकी नजर जमीन पर बिखरे दानों पर पड़ी। वे दाने चुगने के लिये जमीन पर उतर आये। वे जैसे ही दाने चुगने को हुये, जाल में फंस गये। वे समझ गये, उन्हें जाल में फंसाने के लिये ही जमीन पर दाने डाले गये थे।

''अब क्या करें?'' एक कबूतर बोला।

''एक ही रास्ता है। आकाश में उड़ चलें।'' दूसरा कबूतर सोचकर बोला।

''लेकिन यह जाल?'' पहले कबूतर ने पूछा।

''हम सब एक साथ प्रयास करेंगे, तो जाल सहित उड़ जायेंगे।'' दूसरे कबूतर ने समझाया।

''संगठित होकर कोई भी काम किया जा सकता है।''

दूसरे कबूतर का सुझाव सबको पसन्द आया। सब कबूतर एक साथ उड़े तो जाल भी उनके साथ आकाश में उड़ चला। जाल को कबूतरों के साथ उड़ता देखकर चिड़ीमार भागा। चिड़ीमार आकाश में उड़ते हुए कबूतरों के पीछे भागने

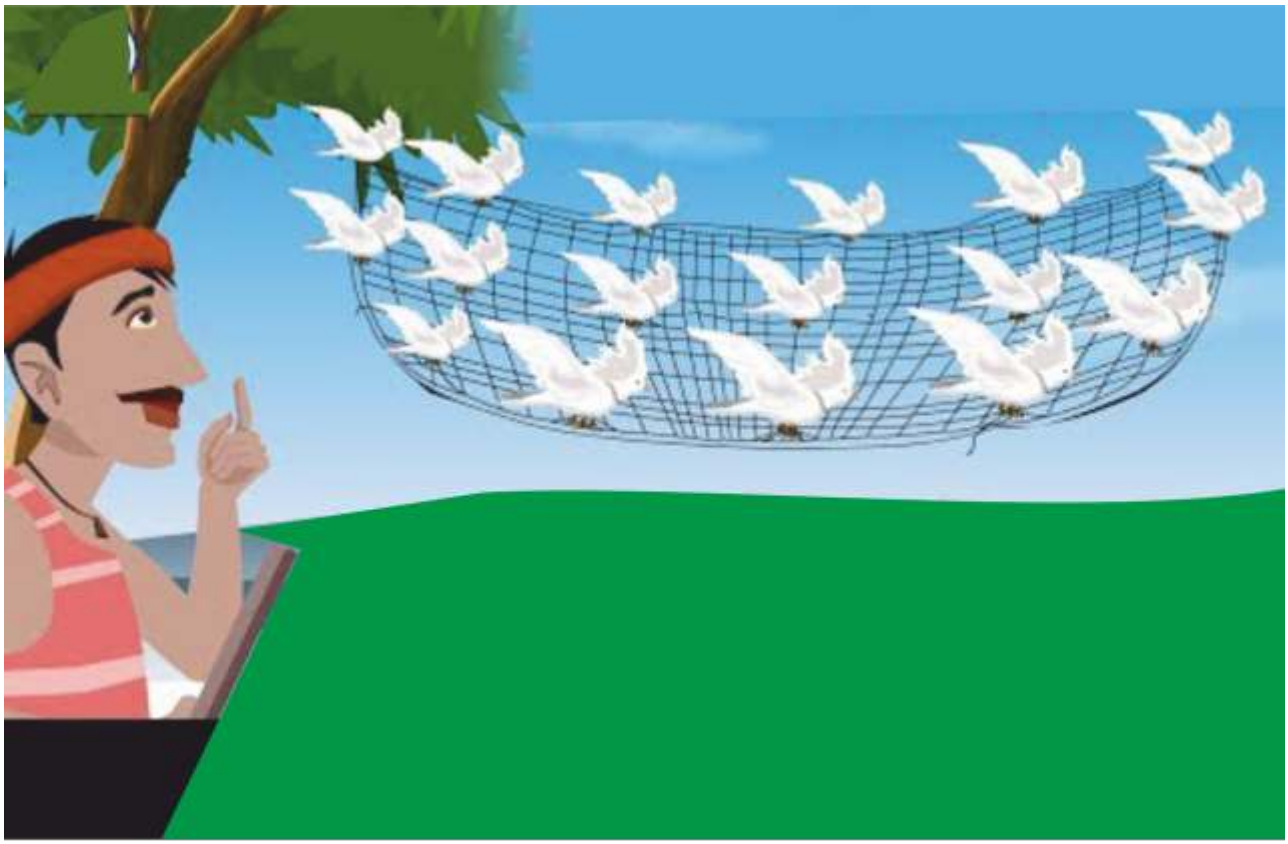

लगा। एक किसान की उस पर नज़र पड़ी। चिड़ीमार से किसान बोला, ''उड़ते हुये कबूतरों के पीछे क्यों भाग रहा है? मूर्ख! तू उनसे तेज नहीं दौड़ पायेगा।''

''जानता हूँ, मैं उनका पीछा नहीं कर पाऊँगा।''

''फिर क्यों भाग रहा है?''

''अभी कबूतरों में एकता है। इसलिये मेरे जाल को उड़ाकर ले जा रहे हैं। अगर उनमें झगड़ा हो गया, तो वो मेरे वश में आ जायेंगे।''

कबूतरों को आकाश में उड़ते काफी देर हो गई। तब दूसरा कबूतर बोला, ''मेरी तरकीब काम आई।''

''लेकिन ताकत तो मैं लगा रहा हूँ।'' पहला कबूतर बोला।

''तू नहीं मैं।'' तीसरा कबूतर बोला।

और आकाश में उड़ते हुये कबूतरों में तू-तू, मैं-मैं होने लगी। सब एक-दूसरे से अपने को ताकतवर बताने लगे। पहले वे एकजुट होकर उड़ रहे थे। पर झगड़ा होने पर उनमें बिखराव हो गया। नतीजा, वे जाल समेत जमीन पर नीचे आ गिरे। चिड़ीमार ने उन्हें पकड़ लिया।

सच कहा है- **संगठन में शक्ति है।**

हँसती दुनिया का यही विचार।
बच्चे पाएं सुसंस्कार।

बालगीत : डॉ. हरीश निगम

गर्मी का गीत

हुई धूप की तीखी बोली,
खींचे कान हवा।
घर-आंगन तपते हैं जैसे,
चूल्हे चढ़ा तवा।

कोट-रजाई स्वेटर-कम्बल,
दुबके छुपे पड़े।
कुल्फी-लस्सी इतराती हैं,
कुर्ते जी अकड़े।

हुआ शहद मटके का पानी,
छाया स्वर्ग लगे।
पंखे-कूलर छुट्टी के दिन,
लगते बहुत सगे।

बाल कविता : कमलसिंह चौहान

पेड़ की छाया

सूरज तपता गरमी आई,
घर आंगन में लपट समाई।
व्याकुल हो गये पशु भी,
ऋतु है गरमी की भाई।

नदियां सूखी पनघट रूठे,
जंगल में भी दिखते खूंटे।
पत्ते बजते खड़खड़ करके,
गरम हवा की लहर समाई।

अच्छा लगता बरफ का गोला,
चुन्नू मुन्नू का मन डोला।
प्यास गले में अटक रही है,
मिलकर सबने प्यास बुझाई।

पुण्यतिथि पर विशेष (लेख) : शिवचरण चौहान

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

बच्चों, तुमने–

बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी।

कविता तो जरूर पढ़ी-सुनी होगी! भारत की आजादी की लड़ाई में जिनका विशेष योगदान है। उनमें रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजी फौज से लड़ते हुए वीरगति पाई थी। एक नारी होकर उन्होंने जिस साहस का परिचय दिया; वह अद्‌भुत है और इसके कारण उनका नाम इतिहास में अमर है।

बच्चों, रानी लक्ष्मीबाई का बचपन का नाम मनु था। उनका जन्म 19 नवम्बर, सन् 1835 को बनारस में हुआ। इनके पिता का नाम मोरोपंत तथा माँ का नाम भागीरथी बाई था। मनु जब केवल चार वर्ष की थी तब माँ का देहांत हो गया। पिता मोरोपंत, मनु को लेकर पेशवा बाजीराव द्वितीय के पास बिठूर आ गए। बाजीराव को अंग्रेजों ने पूना से निर्वासित कर कानपुर के पास बिठूर की रियासत दी थी। बाजीराव, मनु को छबीली कहकर पुकारते थे। बाजीराव के कोई संतान नहीं थी। इसलिए उन्होंने नाना साहब को गोद ले रखा था। बच्चों, मनु नाना साहब के साथ खेलने लगीं। नाना साहब के साथ उन्होंने तीर, तलवार, बंदूक चलाना सीखा और घुड़सवारी में भी महारत हासिल कर ली।

एक बार नाना साहब और मनु में घुड़दौड़ हुई। नाना, पीछे रह गए तो उन्होंने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई। घोड़ा ठोकर खाकर लड़खड़ाया और नाना नीचे गिर पड़े। घायल नाना को मनु अपने घोड़े पर बैठा कर घर लाईं। सभी ने मनु के धैर्य और साहस की प्रशंसा की।

मनु जब थोड़ा बड़ी हुईं तो उनका विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव से कर दिया गया। अब मनु लक्ष्मीबाई बन गईं और झाँसी की रानी कही जाने लगीं। पर लक्ष्मीबाई महल में रानियों की तरह न रहकर वीरों की तरह रहती और युद्ध का अभ्यास करती। उन्हें गहनों की जगह अच्छी-अच्छी तलवारें रखने का शौक था।

उन दिनों देश में अंग्रेज अपने साम्राज्य का विस्तार करने में लगे हुए थे। वे धीरे-धीरे भारत के राजघरानों को अपने अधिकार में लेते जा रहे थे। गंगाधर राव ने भी अपना राज्य सुरक्षित रखने के लिये अंग्रेजों से संधि कर ली। संधि के तहत झाँसी में अंग्रेजी फौज की एक टुकड़ी रख दी गई जिसका खर्च झाँसी के राजा के ऊपर डाला गया। जो सालाना 2 करोड़ 26 लाख रुपया था। यह बात रानी लक्ष्मीबाई को बहुत बुरी

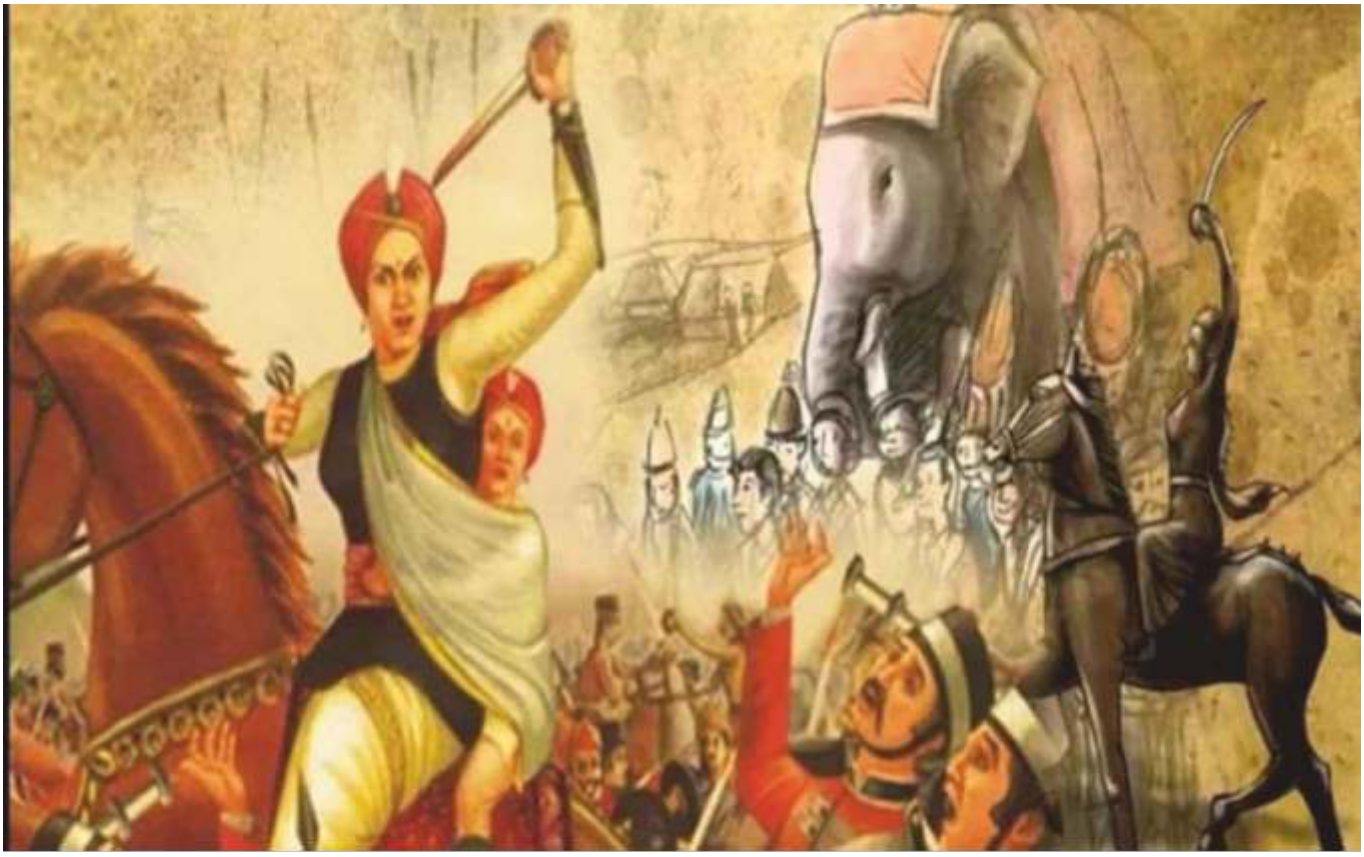

लगी। इसलिए रानी ने किले में अपनी सखियों को सैन्य शिक्षा देनी प्रारम्भ कर दी तथा फौज की एक टुकड़ी भी बनाई।

इसी बीच रानी लक्ष्मीबाई ने एक पुत्र को जन्म दिया। पूरे झाँसी में उत्सव हुआ पर जन्म के तीसरे महीने राजकुमार का देहांत हो गया। झाँसी में शोक छा गया। राजा गंगाधर राव तो बेहाल हो गए। रानी की चिंता बढ़ गई। राज्य का उत्तराधिकारी न होने पर अंग्रेज झाँसी हड़प लेंगे। यह चिंता रानी को सालने लगी। उन्होंने सलाह करके, एक पाँच वर्षीय बालक आनन्द को गोद ले लिया; जिसका नाम दामोदर राव रखा गया। दामोदर राव ही झाँसी का वारिस होगा और उसके बालिग होने तक रानी लक्ष्मीबाई झाँसी का राज-काज संभालेंगी। इस आशय का एक पत्र अंग्रेज सरकार को गंगाधर राव ने भिजवाया। गंगाधर राव बीमार रहते थे और चाहते थे कि झाँसी की गद्दी लक्ष्मीबाई सम्भालें। पर होनी को कुछ और ही मंजूर था। अचानक एक दिन गंगाधर राव का देहांत हो गया।

अंग्रेजों को तो जैसे इसी समय का इंतजार था। उन्होंने दामोदर राव को झाँसी का उत्तराधिकारी मानने से इंकार कर दिया और झाँसी को अपने राज्य में मिला लिया। लक्ष्मीबाई की सालाना पाँच हजार रुपये की पेंशन बांध दी।

रानी लक्ष्मीबाई भला इसे कैसे मान लेतीं। उन्होंने घोषणा कर दी कि मैं अपनी झाँसी अंग्रेजों को नहीं दूंगी और उन्होंने सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी तात्या टोपे के साथ मिलकर झाँसी के किले को अंग्रेजों से आजाद करा लिया।

इस पर गुस्साए अंग्रेजों ने टीकमगढ़ के दीवान नत्थे खां को भड़का कर झाँसी पर हमला करवा दिया। रानी के तोपची गौस खां की तोपों की मार से

नत्थे खां टिक नहीं सका और रणभूमि से भाग खड़ा हुआ।

रानी लक्ष्मीबाई पुरुषों की तरह कपड़े पहनतीं और वीर भेष में रहती थीं। सिर पर लाल साफा, तलवार व ढाल और पिस्तौल हरदम साथ रखती थीं। काना, मंदरा, झलकारी सखियां उनके साथ रहती थीं।

लगभग दस महीने रानी ने झाँसी पर शासन किया। उनके राज्य में प्रजा सुखी थी। इसी बीच 21 मार्च सन् 1858 में ह्यूरोज एक विशाल अंग्रेजी फौज लेकर झाँसी में चढ़ आया। दोनों ओर से घनघोर युद्ध होने लगा। रानी की तोपें अंग्रेजों पर कहर बनकर टूटी। घनगर्जन तोपों ने ह्यूरोज की फौज के छक्के छुड़ा दिए। जब ह्यूरोज ने जीत मुश्किल देखी तो उसने किले के ओरछा दरवाजे के रक्षक दुल्हाजू को लालच देकर तोड़ लिया। दुल्हाजू ने लक्ष्मीबाई के साथ विश्वासघात किया और फाटक खोल दिया। अंग्रेजी सेना किले में घुस आई और मार-काट करने लगी। सरदारों की राय मानकर रानी लक्ष्मीबाई अपने दत्तक पुत्र दामोदर राव को पीठ पर बांधकर घोड़े पर सवार होकर निकल पड़ीं और कालपी आ गईं। कालपी में यमुना किनारे बने किले में तात्या टोपे और नाना साहब के छोटे भाई राव साहब ने रानी का साथ दिया और एक छोटी सेना भी बनाई। पर अंग्रेजों ने यहाँ भी उसका पीछा किया और हमला बोल दिया।

कालपी से राव साहब, तात्या टोपे और लक्ष्मी बाई बचते बचाते ग्वालियर पहुँचे और ग्वालियर के किले पर कब्जा कर लिया। पर अंग्रेजी सेना तो जैसे रानी की दुश्मन ही बन गई थी। महारानी के ग्वालियर पहुँचते ही अंग्रेजी फौज भी ग्वालियर आ पहुँची। दोनों से घमासान लड़ाई छिड़ गई। इस युद्ध में रानी का घोड़ा मारा गया। उनकी सखियां भी नहीं रहीं।

रानी को नया घोड़ा लेना पड़ा। नया घोड़ा अनाड़ी था और अड़ जाता था। ऐसे में रानी ने लड़ाई से निकलने का निश्चय किया। उन्होंने दांतों से घोड़े की लगाम पकड़ी और दोनों हाथों से तलवार चलाते हुए बिजली की गति से आगे बढ़ीं। अंग्रेज फौज ने उनका पीछा किया।

रानी लगभग निकल ही आई थीं कि रास्ते में एक नाला आ गया। घोड़ा नया था। वह नाला पार करना नहीं जानता था। वह वहीं अड़ गया। तब तक पीछे से शत्रु सैनिक आ गए। एक अंग्रेज ने बंदूक से रानी को गोली मार दी। रानी ने फौरन उस अंग्रेज की गर्दन अपनी तलवार से उड़ा दी। रानी का विकराल रूप देख अंग्रेजी सेना भाग खड़ी हुई। तब तक रानी के विश्वासपात्र सिपाही आ गए। रानी के शरीर में अनेक घाव लगे थे। खून बह रहा था। अपना अंत समय देख रानी ने सिपाहियों से कहा कि वे कुछ ऐसा करें कि उनके शव को अंग्रेज हाथ न लगा पाएं। इतना कहकर रानी ने अंतिम सांस ली। सिपाहियों ने रानी का शव पास ही स्थित बाबा गंगादास की कुटिया में ले जाकर छिपा दिया। अंग्रेज उनकी लाश नहीं पा सके। बाद में वहीं रानी की समाधि बना दी गई।

अंग्रेजों से लड़ते हुए 18 जून, 1858 को रानी लक्ष्मीबाई शहीद हुई थीं। अपने देश की आजादी के लिए वह शहीद हो गईं। कवियों ने उनकी वीरता के गुण गाए हैं। कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता–

चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी।
बूढ़े भारत में आई फिर से नई जवानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

आज भी लोगों की जुबान पर है।

बाल कहानी : उदय ठाकुर

काला कौवा और पीली चिड़िया

पेड़ पर बैठा कौआ टहनी पर चोंच मार रहा था। चोंच साफ करके कौए ने चारों ओर नज़र दौड़ायी तो उसे 'पकड़ो-पकड़ो' का शोर सुनाई दिया। उसने देखा दो लड़के एक पीली चिड़िया के पीछे लगे हुए थे। पीली चिड़िया एक झाड़ी के नीचे दुबक गई। इतने में कौआ भी वहाँ आ पहुँचा। कौए ने पीली चिड़िया से पूछा– कौन है तू?

वह बोली– मैं चिड़िया हूँ।

–तू आई कहाँ से?– कौए ने पूछा।

–मैं पिंजरे में रहती थी। एक दिन एक लड़की कटोरी में पानी लाई। उसने पिंजरे का दरवाजा खोला और मैं बाहर निकल गई। इन लड़कों ने मुझे देख लिया और मेरी जान के दुश्मन हो गए।– चिड़िया बोली।

–खैर, किसी से डरना नहीं, पर अब तू जीयेगी कैसे?– कौए ने कहा।

–मेरी तो बहुत थोड़ी-सी जरूरत है; बस कुछ दाने।– चिड़िया बोली।

–तू रहेगी मेरे साथ? आम के पेड़ पर मेरा घोंसला है।– कौए ने पूछा।

पीली चिड़िया तुरन्त मान गई। कौआ और पीली चिड़िया एक घोंसले में रहने लगे। कभी-कभी पीली चिड़िया सोच में डूब जाती। अपने भाग्य के बारे में सोचती रहती, शायद पिंजरे में ही रहना अच्छा होता। वहाँ पेट भी भरा रहता। वह कई बार उस घर तक गयी भी जिसके वहाँ पिंजरा रखा हुआ था। उसमें अब दो तोते बैठे हुए थे। चिड़िया उनसे ईर्ष्या करने लगी।

एक दिन सुबह पीली चिड़िया ने बाहर झांककर देखा। चारों ओर सब कुछ सफेद था। रात को हिमपात हुआ था। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि वे दाने भी बर्फ के नीचे दब गये थे, जो पीली चिड़िया खाया करती थी। दो दिन तक भूखी रहकर पीली चिड़िया बिल्कुल हताश हो गयी। वह वैसे भी दुःख में डूबी बैठी थी। सहसा उसने लड़कों को बाग में आते देखा।

लड़कों ने जमीन पर जाल बिछाया, दाने फेंके और भाग गये।

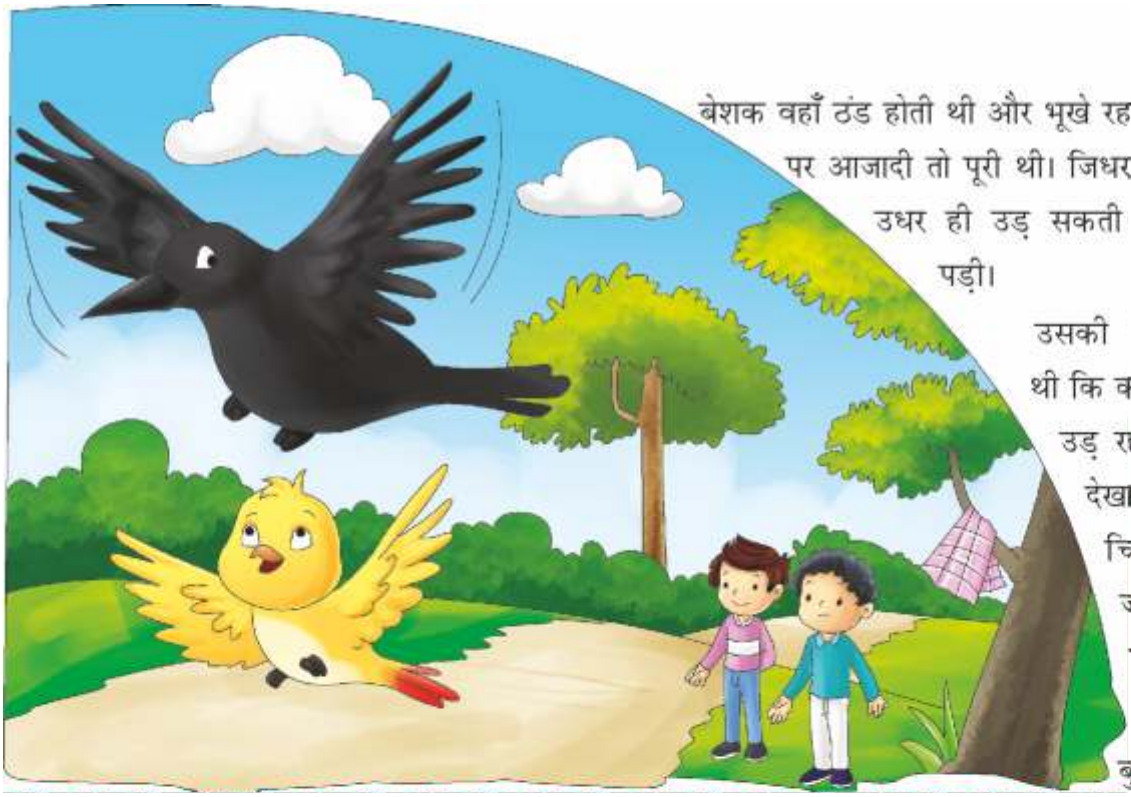

बेशक वहाँ ठंड होती थी और भूखे रहना पड़ता था, पर आजादी तो पूरी थी। जिधर जी में आया उधर ही उड़ सकती थी। वह रो पड़ी।

उसकी खुशकिस्मती थी कि कौआ उधर ही उड़ रहा था। उसने देखा कि पीली चिड़िया तो जाल में फंसी पड़ी है।

–वाह री बुद्धू! मैंने कहा था न कि इन दानों को मत छूना।– कौआ बड़बड़ाया।

–फिर कभी ऐसा नहीं करूंगी।– चिड़िया रूआंसी होकर बोली।

कौआ ठीक समय पर आ गया था। लड़के अपना शिकार पकड़ने के लिए भागे आ रहे थे, लेकिन कौए ने बारीक जाल फाड़ डाला और चिड़िया आजाद हो गई। लड़के बड़ी देर तक कौए के पीछे भागते रहे, वे उस पर पत्थर फेंक रहे थे।

–कितना अच्छा हुआ।– पीली चिड़िया फिर से अपने घोंसले में पहुँचकर खुश हो रही थी।

–हाँ, अब तो अच्छा हुआ पर आगे से खबरदार रहना।– कौआ बड़बड़ा रहा था। पीली चिड़िया फिर से कौए के घोंसले में रहने लगी। अब वह ठंड और भूख की शिकायत नहीं करती थी।

स्वतंत्रता का अपना ही आनन्द है।

● ● ●

–अरे, ये लड़के कितने अच्छे हैं। नीचे बिछे जाल को देखकर पीली चिड़िया खुश होकर बोली– कौआजी, लड़के मेरे लिए दाना लाये हैं।

कौआ बड़बड़ाया– खबरदार जो उधर गयी, सुना तूने? जैसे ही दाना चुगने लगोगी फौरन जाल में फंस जाओगी।

–फिर क्या होगा?– चिड़िया ने पूछा।

–फिर दुबारा तुझे पिंजरे में बन्द कर देंगे।– कौए ने कहा।

बेचारी पीली चिड़िया सोच में पड़ गयी। कुछ दिन तक तो वह मन कड़ा किये रही, लेकिन भूख पर कब तक जोर चलता। वह दानों के लालच में आ गयी और जाल में फंस गयी। फिर 'मुझे बचाओ', 'मुझे बचाओ' की दर्द भरी आवाज में चीखने लगी। अब वह सोचने लगी इस दुनिया में कौए के घोंसले से बेहतर जगह और कहीं नहीं है।

दो बाल कविताएं : कमलसिंह चौहान

शुद्ध पर्यावरण

तारों का देखो टिमटिमाना,
मुस्कुराकर धरती पर उतर आना।
चंदा का नदी के पानी पर तैरना,
मेंढक का छपक सा कूद जाना।।

फूलों का तितली देख रूठना,
भौरों का कानों में गुनगुनाना।
मधुमक्खी का लटकना छत्ते पर,
शुद्ध पर्यावरण का मौसम सुहाना।।

पलकों पर थिरकता बचपन,
शुद्ध हवा की लहर में अपनापन।
जीव जंतु मगन हो नाचने लगते,
प्रेम में सारा जगत समा जाना।।

खट्टे मीठे आम

अब अमराई में आम डोले,
फुनगी पर देखो कोयल बोले।
भीनी खुशबू फैल गई है,
चिड़िया फुदकी हौले हौले।।

गुच्छे लटक रहे अब देखो,
मिल जुलकर तुम नजरें फेंको।
तोते ने भी चोंच मारी,
लगता धरती आँचल खोले।।

हरे भरे हैं आम रसीले,
खट्टे मीठे कुछ है पीले।
लंगड़ा देसी कलमी आम,
बिट्टू किट्टू का मन डोले।।

खुले मन से हमको देते,
पेड़ कभी हमसे नहीं लेते।
त्याग प्रेम सब इनसे सीखो,
सबके मन की आँखें खोले।।

लेख : राजकुमार जैन

उपयोगिता से भरपूर :

नींबू

नींबू एकमात्र ऐसा फल है, जो देश के कोने-कोने में सहजता से सुलभ हो जाता है तथा वर्षभर आसानी से मिल जाता है। नींबू एक अत्यंत उपयोगी फल है। विटामिन-सी का नींबू एक बहुत बड़ा स्त्रोत है। नींबू न केवल सेहत के लिए फायेदमंद है, बल्कि सौन्दर्य के लिए भी यह उपयोगी है। जहाँ भी गन्दगी या मैल होता है, खटास उसे दूर करती है। चाहे यह गन्दगी त्वचा में हो या खून अथवा हड्डी में। आयुर्वेद में नींबू को प्यास बुझाने वाला तथा भूख बढ़ाने वाला कहा गया है। आयुर्वेदिक व यूनानी औषधियों में नींबू के रस का बहुतायत से उपयोग किया जाता है।

अधिकांश वैज्ञानिकों की राय है कि नींबू का उद्‌गम-स्थल भारत ही है। 'थोर्प डिक्शनरी ऑफ एप्लाइड केमिस्ट्री' के मुताबिक नींबू का जन्म तो भारत में ही हुआ लेकिन उत्पादन की दृष्टि से अब अमेरिका अग्रणी है।

नींबू पोषक तत्वों से भरपूर है प्रति 100 ग्राम नींबू में पाये जाने वाले पोषक तत्व निम्नानुसार हैं– कैलोरी : 57.0 मिलीग्राम, लौह तत्व : 2.3 मिलीग्राम, नायसिन : 0.1 मिलीग्राम, कैल्शियम : 70.0 मिलीग्राम, प्रोटीन : 1.0 मिलीग्राम, विटामिन-सी : 39.0 मिलीग्राम।

नींबू के इस रासायनिक विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि यह सेहत के लिए एक उपयोगी फल है। नींबू की अनेक किस्में प्रचलित हैं मसलन– गलगल, विजोरा, जमीरी, कागज़ी, गुदड़िया, नेपाली आदि। सेहत की दृष्टि से कागजी नींबू सर्वश्रेष्ठ होता है। कागजी नींबू का छिलका बेहद पतला होता है तथा इसमें रस भी अन्य नींबुओं की अपेक्षा अधिक होता है। अचार, मुरब्बों एवं आयुर्वेदिक औषधियों में कागजी नींबू ही प्रयुक्त किया जाता है। नींबू खरीदते समय आप इस बात का विशेष ध्यान रखें कि उसका आकार बड़ा हो, वह साफ तथा गहरे पीले रंग का हो तथा छिलका पतला और मुलायम हो। पीले नींबू उपलब्ध न होने की दशा में हरे रंग के नींबू उपयोग में लिए जा सकते हैं। फ्रिज में नींबुओं को लगभग डेढ़ माह तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

शरीर में विटामिन-सी की कमी से स्कर्वी रोग हो जाता है। इससे मसूढ़ों में से खून आने लगता है। यह रोग हो जाने पर नींबू का नियमित सेवन निश्चय ही फायदेमंद होगा क्योंकि विटामिन-सी का नींबू भरपूर स्रोत है। नींबू का रस मसूढ़ों पर लगाने से भी खून बहना बंद हो जाता है।

आईये, अब नींबू के कुछ उपयोगी नुस्खे जानें–

★ यदि आपको कब्ज की शिकायत है तो प्रतिदिन सवेरे गुनगुने पानी के एक गिलास में एक नींबू का रस मिलाकर सेवन करें। कुछ ही दिनों में कब्ज दूर हो जाएगी तथा पेट बिल्कुल साफ रहने लगेगा।

★ लू आदि लगने से यदि नाक में से बहता खून बंद न हो तो नाक में कुछ बूंद नींबू का रस डालने से खून बहना तत्काल बंद हो जाएगा।

★ सिर की खुजली से छुटकारा पाने के लिए एक नींबू काटकर सिर पर रोजाना मलें।

★ पुरानी खाज-खुजली में नींबू के रस को हल्दी में मिलाकर नियमित लेप करने से लाभ होता है।

★ शयन से पूर्व गर्म पानी में नींबू का रस मिलाकर हाथ-पैर धोने से त्वचा का खुरदरापन दूर हो जाता है तथा त्वचा चिकनी व कांतिमय हो जाती है।

★ नींबू के रस में शहद व काला नमक मिलाकर पीने से लगातार चलने वाली हिचकी तत्काल रूक जाएगी।

★ सप्ताह में एकाध बार नींबू के रस में सेंधा नमक व पानी मिलाकर पीना आंतों की सफाई के लिए बहुत उपयोगी होता है।

★ नींबू से अधिक रस प्राप्त करने के लिए उसे काटने से पहले किसी मेज पर रखकर हथेली से दबाव डालते हुए घुमाएं। चारों ओर से मुलायम हो जाने से काटने पर अधिक रस निकलेगा।

उपरोक्त कुछ उपयोगों से जाहिर है कि नींबू हमारे स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य के लिए लाभदायक है।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

वाह! किट्टी हम सब पहली बार एक साथ गाँव जाएंगे और खूब मस्ती करेंगे।
चलो! चलो! वरना देर हो जाएगी।
नानी जी! हम आ गए। नानी क्या हम सब आम के बगीचे में घूमने जाएं?
क्यों नहीं बेटा? जाओ घूमकर आओ।

अगर मैं ये आम अपने दोस्तों को दे दूँगी तो ये कम हो जाएंगें।
अरे वाह! इतने सारे आम।
वाह भाई! ये सारे आम तो मैं अकेली ही खाऊँगी।
अरे! किट्टी, कितनी खराब है। हमें कुछ भी नहीं दे रही खाने को।
किट्टी, हम जा रहे हैं।
हाँ! हाँ! जाओ मैं अपने आप घर आ जाऊँगी।

धड़ाम!!!..
बचाओ! बचाओ!!
अरे! किट्टी तुम गिर कैसे गई?
चलो हम तुम्हें घर लेकर चलते हैं।
आंटी! आंटी! किट्टी गिर गई।
सॉरी दोस्तों। आओ अब हम सब मिलकर आम खाते हैं।
सॉरी मम्मी मैंने इन लोगों को आम नहीं दिए और इतना बुरा बर्ताव किया इन्होंने फिर भी मेरी मदद की। आगे से मैं ऐसा नहीं करूंगी। कोई भी चीज़ मिल बांटकर खाऊँगी।

वैज्ञानिक जानकारी : घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : रेल की पटरियों में जोड़ों के बीच खाली स्थान क्यों छोड़ा जाता है?

उत्तर : रेलगाड़ी जब पटरी पर चलती है तो पहियों तथा पटरी के बीच में एक प्रकार का घर्षण होता है। इस घर्षण से बहुत अधिक मात्रा में ऊष्मा निकलती है जिसके कारण रेल की पटरी फैलती है। गर्म प्रदेशों में सूर्य की प्रचंड गर्मी से भी रेल की पटरियां फैल जाती है। पटरी के इस फैलाव के लिए स्थान देने के उद्देश्य से दो पटरियों के बीच में खाली स्थान छोड़ा जाता है। यदि स्थान नहीं छोड़ा जाएगा तो पटरी के फैलाव से वह टेढ़ी-मेढ़ी हो जाएगी एवं रेलगाड़ी पटरी से उतर जाएगी।

प्रश्न : बोतल को गर्म करने पर उसमें फंसी हुई डाट आसानी से बाहर क्यों निकल जाती है?

उत्तर : विज्ञान का नियम है कि ऊष्मा प्रदान करने से वस्तु में प्रसार होता है। इसी नियम का उपयोग करके जब कांच की बोतल को गर्म किया जाता है तो उसमें प्रसार हो जाता है। प्रसार के कारण ही बोतल के मुख में फंसी हुई डाट सरलतापूर्वक बाहर निकल जाती है।

प्रश्न : थर्मस बोतल में गर्म वस्तु गर्म और ठंडी वस्तु ठंडी क्यों रहती है?

उत्तर : थर्मस बोतल कांच की बनी होती है और कांच ऊष्मा का कुचालक होता है। कांच की बोतल की दोनों दीवारों के बीच निर्वात (बिना वायु का स्थान) होने से ऊष्मा बोतल की अन्दर की दीवार से बाहर नहीं आ पाती। इसके अतिरिक्त बोतल की चमकदार बाहरी दीवारें ऊष्मा की विकिरण किरणों को परावर्तित करके बाहरी सतह पर ही रोक लेती हैं। अत: थर्मस बोतल में गर्म वस्तु गर्म तथा ठंडी वस्तु ठंडी बनी रहती है।

प्रश्न : खाना पकाने के बर्तन नीचे से काले और ऊपर से चमकदार क्यों होते हैं?

उत्तर : काली वस्तु ऊष्मा को शीघ्रता से अवशोषित कर लेती है। अत: खाना पकाने के बर्तनों के पेंदे काले रखे जाते हैं ताकि बर्तन अधिक ऊष्मा को ग्रहण करके जल्दी से खाना पका दे। दूसरी बात, बर्तनों की ऊपरी सतह चमकदार इसलिए रखी जाती है ताकि बर्तनों में से ऊष्मा का स्थानान्तरण (बाहर न निकल सके) न हो सके।

प्रश्न : बर्फ को बोरी या बुरादे में क्यों रखते हैं?

उत्तर : बोरी और बुरादे में तमाम छिद्र होते हैं और उन छिद्रों में वायु भरी होती है। यह तो तुम जानते ही हो कि वायु ऊष्मा की कुचालक रहती है जो बाहर की ऊष्मा को अन्दर बर्फ तक आने से रोकती है। फलस्वरूप, बर्फ पिघलने नहीं पाती है। बस यही वजह है कि बर्फ को बोरी या बुरादे में ही रखा जाता है।

कविता : दिनेश दर्पण

गर्मी के कोड़े

सूरज के रथ के घोड़े,
बरसा रहे हैं गर्म कोड़े।

सन सन करती चलती लू,
दुपहर तक तप जाती भू।

रवि की किरणें ज्यों घड़ी हुई,
सिर पर देखो वे खड़ी हुई।

छाया लगती सबको प्यारी,
पिंकी जाकर सोती न्यारी।

संध्या जब अवनि पर आती,
विविध छटा अपनी बिखराती।

पश्चिम में छा जाती लाली,
कूक रही कोयल मतवाली।

इसी तरह छुप जाता है दिन,
उमस भरा कट जाता है दिन।

कविता : गफूर 'स्नेही'

जल का सदुपयोग

जल का सदुपयोग करो,
जरा न दुरुपयोग करो।
जल से सबकी बुझती प्यास,
जल है अब कम अपने पास।
सूखे हैं झील और तालाब,
खपत का भी बढ़ा दबाब।
जहाँ रूकेगा गंदा जल,
जन्मेंगे मच्छर हर पल।
जब तक न हो जाये बरसात,
जल बचत की ही हो बात।
आपस में सहकार हो,
तब ही गर्मी पार हो।

प्रेरक-प्रसंग : सीताराम गुप्ता

आत्मविश्वास की विजय

विल्मा रुडोल्फ का विक्लांगता से 3 ओलंपिक गोल्ड तक का सफर

घटना है वर्ष 1960 की। स्थान था यूरोप का भव्य ऐतिहासिक नगर तथा इटली की राजधानी रोम। सारे विश्व की निगाहें 25 अगस्त से 11 सितम्बर तक होने वाले ओलम्पिक खेलों पर टिकी हुई थीं। इन्हीं आलेम्पिक खेलों में एक बीस वर्षीया अश्वेत बालिका भी भाग ले रही थी। वह इतनी तेज दौड़ी, इतनी तेज दौड़ी कि 1960 के ओलम्पिक मुकाबलों में तीन स्वर्ण पदक जीतकर दुनिया की सबसे तेज धाविका बन गई।

रोम ओलम्पिक में 83 देशों के लोग 5346 खिलाड़ियों में इस बीस वर्षीया बालिका का असाधारण पराक्रम देखने के लिए इसलिए उत्सुक नहीं थे कि विल्मा रुडोल्फ नामक यह बालिका अश्वेत थी अपितु यह वह बालिका थी जिसे चार वर्ष की आयु में डबल निमोनिया और काला बुखार होने से पोलियो हो गया और फलस्वरूप उसे पैरों में ब्रेस पहननी पड़ी। विल्मा रुडोल्फ ग्यारह वर्ष की उम्र तक चल-फिर नहीं सकती थी लेकिन उसने एक सपना पाल रखा था कि उसे दुनिया की सबसे तेज धाविका बनना है। उस सपने को यथार्थ में परिवर्तित होता देखने के लिए ही इतने उत्सुक थे पूरी दुनिया के लोग और खेलप्रेमी।

डॉक्टर के मना करने के बावजूद विल्मा रुडोल्फ ने अपने पैरों की ब्रेस उतार फेंकी और स्वयं को मानसिक रूप से तैयार कर अभ्यास में जुट गई। अपने सपने को मन में प्रगाढ़ किये हुए वह निरन्तर अभ्यास करती रही। उसने अपने आत्मविश्वास को इतना ऊँचा कर दिया कि असम्भव सी बात पूरी कर दिखलाई। उसने एक साथ तीन स्वर्ण पदक हासिल कर दिखाए। सच है यदि व्यक्ति में पूर्ण आत्मविश्वास है तो शारीरिक विकलांगता भी उसकी राह में बाधा नहीं बन सकती।

सुमिरण किस अवस्था में करें

एक बार किसी ने भापा रामचन्द जी से पूछा– प्रभु (निराकार) का सुमिरण क्या बैठकर करना चाहिए या किसी भी अवस्था में चलते-फिरते या लेटे हुए भी किया जा सकता है?

उन्होंने कहा– आप मुँह में मिश्री डालकर चाहे चलें, चाहें बैठ जाएं या लेट जाएं। मिश्री आपको मिठास देती रहेगी। आपका मुँह मीठा ही रहेगा। बैठने या चलने-फिरने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा। सिर्फ मिश्री आपके मुँह में रहनी चाहिए।

इसी प्रकार सुमिरण है। जिस तरह मिश्री का काम मिठास देना है, उसके लिए किसी खास पोजीशन में होने की जरूरत नहीं है।

इसी तरह हम चाहे जिस स्थिति में भी हों– चलते-फिरते, उठते-बैठते, खाते-पीते अर्थात् हर पोजीशन एवं हर स्थिति में ही सुमिरण हमें शांति प्रदान करेगा और जितना ज्यादा सुमिरण करेंगे, उतनी ही ज्यादा शांति महसूस होगी।

इसलिए हमारी कोशिश होनी चाहिये कि हम जिस स्थिति में भी हों। सुमिरण करते रहें।

प्रस्तुति : राजन सचदेव

बाल कहानी : ऋचा राय

बिन परिश्रम सब सून

एक गाँव में जैनाथ नाम का एक किसान था। गाँव से कुछ दूरी पर ऊबड़-खाबड़ बंजर भूमि थी। जैनाथ ने उस बंजर भूमि को हरा-भरा करने की योजना बनाई। जैनाथ एक दिन आम के ढेर सारे पौधे खरीद कर ले आया। आम के उन पौधों को उस बंजर भूमि पर लगा दिया। वह प्रतिदिन सुबह उठकर वहाँ पर जाता और वहाँ आम के पौधों को सींचता तथा पशुओं से उनकी रक्षा करने के लिए बाड़ का घेरा बनाता। वह समय-समय उनके लिए खाद-मिट्टी और पानी का भी प्रबंध करता था। जैनाथ को उन वृक्षों से इतना लगाव हो गया कि वह अपना काफी समय उनकी देखभाल में गुजारता था। परिश्रमी जैनाथ की मेहनत रंग लाई। सुनसान और वीरान रहने वाली बंजर भूमि कुछ ही दिनों में हरे-भरे वृक्षों से लहलहाने लगी। फलों की अच्छी फसल देखकर गाँव के कुछ लोगों को ईर्ष्या होने लगी। वे लोग उस भूमि पर अपना हक़ जताने लगे। बात आगे बढ़ी और जैनाथ को ग्राम पंचायत बुलानी पड़ी। पंचायत ने फैसला दिया जब तक उस भूमि पर जैनाथ के वृक्ष हैं वह भूमि जैनाथ की ही मानी जायेगी।

यह निर्णय सुनकर जैनाथ को काफी खुशी हुई। वह दौड़ा-दौड़ा अपने आम के वृक्षों के पास गया। आम के वृक्षों को दोनों हाथों से पकड़कर मुस्कुराने लगा। मानो वह मन ही मन कह रहा हो कि अब तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं।

जैनाथ की मृत्यु के पश्चात् उनके बेटे अलग-अलग रहने लगे। जैनाथ के बेटे उन वृक्षों को खाद, मिट्टी व उनकी सिंचाई की तरफ ध्यान नहीं देते थे। धीरे-धीरे सारे पेड़ सूखने के कगार पर पहुँच गये और जो बचे थे वे एक बड़ी आँधी-तूफान में गिर गये। अब उस भूमि पर कुछ गिने-चुने पेड़ रह गये थे। उन वृक्षों को देखकर ऐसा लगता था मानो वे वृक्ष जैनाथ के बेटों से कह रहे हों कि अभी भी वक्त है हमें बचा लो परन्तु जैनाथ के बेटे शहर जाकर आधुनिकता में खो गये।

सालों बाद जब वे गाँव वापस आये तो देखा कि वे वृक्ष अपने जीवन के अन्तिम श्वांस गिन रहे थे। उन्होंने उस भूमि पर पुनः आम के पौधे लगाने का कार्य प्रारम्भ करना चाहा परन्तु उचित देखभाल के अभाव में वहाँ आम के वृक्ष नहीं लग सके।

आखिरकार जैनाथ के बेटों ने पूरे टीले पर बबूल के पेड़ लगा दिये। जिससे मीठे फल तो उन्हें नहीं मिले, बस कांटों वाली बबूल की लकड़ी से ही उन्हें संतोष करना पड़ा। कहा भी गया है–

अब पछताये क्या होत,
जब चिड़िया चुग गई खेत।

तथा

पेड़ लगाये बबूल का तो आम कहाँ से खायें।

कहा भी है- बिन परिश्रम सब सून।

विशेष लेख : विद्या प्रकाश

शुतुरमुर्ग : सबसे तेज धावक पक्षी

दुनिया में सबसे तेज दौड़ने वाला, सबसे बड़ा और सबसे भारी पक्षी यदि कोई है तो वह है शुतुरमुर्ग। इस पक्षी का एक अन्य नाम है ऑस्ट्रच, जो अफ्रीका के सवाना जंगलों और रेगिस्तान में बहुतायत से पाया जाता है। शुतुरमुर्ग आमतौर पर दस-बारह के समूह में रहना पसन्द करते हैं। शुतुरमुर्ग का जीवनकाल 30 से 40 वर्ष होता है। इसकी आंखें पृथ्वी पर मौजूद किसी भी जन्तु की आंखों से आकार में बड़ी होती हैं

शुतुरमुर्ग विश्व में सबसे तेज दौड़ने वाला पक्षी है। यह हवा में नहीं उड़ सकता लेकिन अपनी छलांग में 10 से 16 फीट यानी 3 से 5 मीटर तक की दूरी आसानी से तय कर सकता है। शुतुरमुर्ग एक घंटे के अन्दर 43 मील यानी 70 किलोमीटर की दूरी तय कर लेता है और लगातार दौड़कर वह एक घंटे में 31 मील यानी 50 किलोमीटर की दूरी हवा में जंप लगाये बगैर कवर कर सकता है। वह अपने पंखों का इस्तेमाल दौड़ते समय अपनी दिशा परिवर्तित करने के लिए करता है। उसके पैर बहुत ही मजबूत और लम्बे होते हैं। जिसका प्रयोग वह दौड़ने में तो करता ही है, आत्मरक्षार्थ भी करता है।

एक प्रकार से वह अपने लम्बे पैरों का इस्तेमाल हथियार के तौर पर भी करता है। वैसे वह सामान्यत: शान्तिप्रिय पक्षी है। यदि वह आत्मरक्षार्थ अपने पैरों से किसी व्यक्ति पर हमला कर दे तो इससे उसकी जान तक जा सकती है। शुतुरमुर्ग के अंडे आश्चर्यजनक रूप से मुर्गी के अंडे से कई गुना बड़े होते हैं। शुतुरमुर्ग का अण्डा आकार में इतना बड़ा होता है कि उसे पकड़ने के लिए व्यक्ति को अपने दोनों हाथों का इस्तेमाल करना पड़ता है। शुतुरमुर्ग का एक अंडा मुर्गी के दो दर्जन अंडों के बराबर होता है, जिसका वजन लगभग 3 पौंड होता है। इसके एक अंडे में लगभग 2000 कैलोरी की मात्रा होती है। प्रयोग में लाने के लिए इसके अंडे को कम से कम 40 मिनट तक पानी में उबालने की आवश्यकता पड़ती है। कालाहारी मरुस्थल (अफ्रीका) के निवासी शुतुरमुर्ग के अंडे के ऊपरी स्तर यानी छिलके का प्रयोग वाटर कन्टेनर के रूप में करते हैं।

शुतुरमुर्ग विश्व का सर्वाधिक भारी पक्षी है। सामान्यत: इसका वजन 100 से 160 किलोग्राम होता है। यह सर्वाहारी पक्षी है। यह खासतौर से पेड़-पौधों,

कीट-पतंगों तथा छोटे जीव-जन्तुओं को ही खाता है। एक शुतुरमुर्ग के पेट के अन्दर रेत तथा छोटे-छोटे कंकड़ भी पाये जाते हैं जो इसके भोजन को ग्रहण करने में सहायता करते हैं।

मादा शुतुरमुर्ग रेत में बने छिद्रों में एक बार में 12 से 18 तक अंडे देती है। यह अंडे 15 से 20 सेंटीमीटर लम्बे तथा 1 किलो 700 ग्राम तक वजनी होते हैं। इनका व्यास 10 से 15 सेंटीमीटर तक होता है। अंडों को सेने का काम दिन में मादा तथा रात में नर द्वारा किया जाता है। 42 से 45 दिन बाद अंडों से बच्चे निकलते हैं। मादा शुतुरमुर्ग अपने डैनों से अपने बच्चों को ढककर उनकी रक्षा करती है। एक महीने में बच्चों का कद एक फुट बढ़ जाता है। मादा शुतुरमुर्ग अपने बच्चों की रक्षा के लिए हिंसक जंगली जानवरों से भिड़ जाने में भी नहीं हिचकिचाती।

इसका मुख्य आहार झाड़ियों के पत्ते, घास, बीज, फल आदि हैं। वैसे यह छोटी-छोटी चिड़ियों और कीट-पतंगों को भी खा लेता है। इसकी पाचन शक्ति इतनी अद्‌भुत है कि यह हरेक वस्तु को पचा सकता है। यह पत्थर तक खाकर हजम कर जाता है। चमकीली वस्तुएं इसे बेहद पसन्द हैं। सिक्के, हीरे, प्लग आदि यह आराम से खा जाता है। एक बार एक शुतुरमुर्ग के पेट से पचास से भी अधिक हीरे निकले थे।

क्रोध में आने पर शुतुरमुर्ग बहुत ही आक्रामक व घातक हो जाता है। आक्रमण के समय यह अपनी लम्बी टांगों तथा मजबूत चोंच का इस्तेमाल करता है। इसकी टांगों की मार से हिंसक पशु भी बचने का प्रयास करते हैं। क्रोध की अवस्था में इसकी चोंच के प्रहार की मारक क्षमता इतनी अधिक होती है कि वह लोहे के चद्दर तक में छेद कर सकता है।

इस पक्षी के पंख बहुत खूबसूरत होते हैं। दक्षिण अफ्रीका, मिस्र, अल्जीरिया आदि देशों में कई 'शुतुरमुर्ग फॉर्म' हैं, जहाँ इन्हें व्यावसायिक रूप से पाला जाता है। प्रत्येक आठ माह में एक बार इन पालतू शुतुरमुर्गों के पंख निकालकर उनका निर्यात कर विदेशी मुद्रा कमाई जाती है। इसके अतिरिक्त ये 'शुतुरमुर्ग फॉर्म' विदेशी पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं। यहाँ शुतुरमुर्ग पर बैठकर सवारी करने का मजा भी लिया जा सकता है।

शुतुरमुर्ग मानव-जाति के लिए पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखने में एक सहायक प्राणी है। यह इस धरती पर आदमी से बहुत पहले अस्तित्व में आया और स्वयं को वातावरण व परिस्थितियों के मुताबिक ढालकर आज भी अस्तित्व में है। शुतुरमुर्ग आदमी के लिए हर दृष्टि से उपयोगी पक्षी है। चोरी छुपे शुतुरमुर्ग का शिकार होने से इनकी संख्या में गिरावट आती जा रही है। पर्यावरण संरक्षण के लिए इनकी सुरक्षा किया जाना अनिवार्य है।

पढ़ो और हँसो

दो दोस्त हिन्दी व्याकरण के पेपर की तैयारी कर रहे थे।

पहला दोस्त : पिंकी मिठाई नहीं खाती। इसमें पिंकी क्या है?

दूसरा दोस्त : मूर्ख।

एक भुलक्कड़ से किसी ने कहा– तुम्हारी पत्नी का एक्सीडेंट हो गया है और वह अस्पताल में है जल्दी पहुँचो।

भुलक्कड़ : (अस्पताल पहुँचा तो उसे कुछ याद आया) अरे मैं तो भूल ही गया मेरी तो अभी शादी ही नहीं हुई है।

पप्पू पहले दिन स्कूल से पढ़कर आया।

–आज स्कूल में क्या सीखा पप्पू?– माँ ने पूछा।

–कुछ भी नहीं।– पप्पू उदास स्वर में बोला– कल फिर जाना पड़ेगा।

भिखारी : माता जी, क्या इस गरीब को थोड़ी मिठाई मिलेगी?

महिला : क्यों रोटी से काम नहीं चल सकता?

भिखारी : चल सकता है पर आज मेरा 'बर्थ डे' है।

– बबलू कुमार (सुल्तानपुर)

बच्चे का दांत निकालने के बाद डॉक्टर ने उसके पिता से कहा– पांच सौ रुपये फीस दे दो।

बच्चे के पिताजी ने कहा– आपने तो फीस के सौ रुपये बताये थे।

–हाँ बोला तो था लेकिन आपके बच्चे ने बहुत शोर मचाया उससे मुझे काफी नुकसान हुआ। बच्चे का शोर सुनकर मेरे चार ग्राहक वापस चले गये।– डॉक्टर बोला।?

भिखारी : सेठ जी कुछ खाने को दे दो। पेट में चूहे कूद रहे हैं।

सेठ : तो चूहे मारने की दो-तीन गोली खा लो।

बहुत दिनों से रूके हुए मेहमान ने घरवालों को पूछा– इस शहर से मैं क्या ले जाऊँ?

घर वाले वैसे भी परेशान थे। उन्होंने कहा– विदाई।

डॉक्टर : (मरीज से) आप क्या पीते हो? चाय, कॉफी, ठंडा।

मरीज : आप क्यों तकलीफ कर रहे हो। मैं तो घर से खा-पीकर आया हूँ।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

एक पागल : कल मैंने कुतुबमीनार को धक्का दिया, लेकिन वह हिली तक नहीं।

दूसरा पागल : हिलती कैसे? मैंने उसे पीछे से पकड़ जो रखा था।

हवलदार : सर, कल कैदियों ने जेल में रामलीला प्रस्तुत की।

इंस्पेक्टर : अच्छा, यह तो बहुत अच्छी बात है।

हवलदार : मगर सर, जो हनुमान बना था, वह संजीवनी बूटी लेने गया था, लेकिन अभी तक नहीं लौटा।

एक भिखारी : तुम्हारी लॉटरी निकल आए तो तुम क्या करोगे?

दूसरा भिखारी : सबसे पहले तो एक स्कूटर खरीदूंगा पैदल भीख मांगते-मांगते टांगे टूट गई हैं।

– पूजा पृथ्वानी (रायपुर)

रामू समोसे के अन्दर के आलू ही खा रहा था और बाहर के हिस्से को फेंक दे रहा था।

एक व्यक्ति ने उससे कहा– आप समोसे के सिर्फ आलू ही क्यों खा रहे हो?

रामू बोला– क्या बताऊँ भाई साहब! डॉक्टर ने मुझे बाहर की चीजें खाने से मना किया है।

– हिमांशु (दिल्ली)

रोंदू : यार भोंदू, मैं तेरा फोन कब से मिला रहा हूँ। हर बार फोन से आवाज आती है।– 'दिस इज स्विच ऑफ ...।'

भोंदू : ओहो .... यार वो तो मेरी 'हैलो ट्यून' है।

ट्रेन स्टेशन पर रूकी। एक यात्री ने खिड़की के पास बैठे दूसरे यात्री से पूछा– भाई साहब, कौन-सा स्टेशन है?

दूसरा यात्री बाहर देखकर बोला– शायद रेलवे स्टेशन है।

– श्याम बिल्दानी (बड़नेरा)

मालकिन : (नौकरानी से) जाओ दर्पण लेकर आओ मैंने अपना चेहरा देखना है।

नौकरानी खाली हाथ लौटकर बोली– मालकिन किसी भी दर्पण में आपका चेहरा नहीं दिखाई दिया। सबमें मैंने देखा मेरा ही चेहरा था।

निर्मला : (गीता से) क्या बात है मटर-पनीर में पनीर नजर नहीं आ रहा है।

गीता : अरे तुमने कभी गुलाबजामुन में गुलाब देखा है क्या?

– भावना निरंकारी (मानसरोवर, जयपुर)

संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन' (अनूपगढ़)

कभी न भूलो

★ अगर बहरों को सुनाना है तो आवाज बहुत जोरदार होनी चाहिये। – शहीद भगत सिंह

★ अपनी क्षमता को पहचान कर और उस पर विश्वास कर कोई बेहतर दुनिया बना सकता है। – दलाई लामा

★ महान आत्माओं ने हमेशा मामूली सोच वाले लोगों के हिंसक विरोध का सामना किया है। – अल्बर्ट आइंस्टीन

★ 'अहिंसा' भय का नाम भी नहीं जानती।

★ दृढ़ संकल्प एक गढ़ के समान है जोकि भयंकर प्रलोभनों से बचाता है। दुर्बल और डांवाडोल होने से हमारी रक्षा करता है। – महात्मा गांधी

★ शांति की शुरुआत मुस्कुराहट से होती है। – मदर टेरेसा

★ समय अत्यधिक बलवान होता है, एक क्षण में समस्त परिस्थितियां बदल जाती हैं। – भीष्म पितामह

★ व्यक्ति के स्वभाव पर उसका भविष्य निर्भर करता है।

★ स्वभाव इन्सान को जन्म से मिलता है और शिक्षा तथा संगति से उसे सुधारा जा सकता है। – प्रेमचंद

★ चरित्र का हीरा विपदाओं के तमाम पाषाण खण्डों को भी काट देता है। – बार्टल

★ स्वाभिमानी भी वही श्रेष्ठ है जो विनम्रता को प्रथम स्थान पर रखता है। – शेक्सपीयर

★ जिसके जीने से बहुत से लोग जीवित रहें, वही इस संसार में वास्तव में जीता है। – पंचतंत्र

★ जीवन न मनोविनोद का स्थान है, न कि अश्रुओं का स्थान। जीवन एक सेवा सदन है। – टॉलस्टॉय

★ यदि सफलता चाहते हो तो निराशावादी विचारों को मन से निकाल बाहर करो। – स्वेट मार्डेन

★ जीतता वह है, जिसमें धैर्य, साहस और सत्य होता है। – हजारीप्रसाद द्विवेदी

★ जो अपनी बुराईयों पर विजय प्राप्त कर लेता है, वही अजेय होकर संसार पर शासन कर सकता है। – तुलसीदास

★ एक छेद भी जहाज को डुबो देता है और एक पाप पापी को नष्ट कर देता है। – जॉन बन्यन

★ जिसके पास आशा है, उसके पास सब कुछ है। – इमर्सन

★ जिस संसार में सदाचार नहीं, वह नष्ट हो जाता है। – लोकमान्य तिलक

★ जिसने ज्ञान को आचरण में उतार लिया उसने ईश्वर को ही मूर्तिमान कर लिया। – विनोबा भावे

★ जिसका ईमान नहीं वह इन्सान नहीं, ईमान न बेचो, भले ही सब बेच दो। – सुकरात

★ जो व्यक्ति छोटे-छोटे कर्मों को भी ईमानदारी से करता है, वही बड़े कर्मों को भी ईमानदारी से कर सकता है। – सैमुअल

★ इन छः का त्याग कभी न करें– सत्य, दान, कर्म, क्षमा, धैर्य और गुरु। – वेदव्यास

★ अपना जीवन लेने के लिए नहीं, देने के लिए है। – स्वामी विवेकानन्द

दो बाल कविताएं : मीरा सिंह 'मीरा'

स्वच्छता अभियान

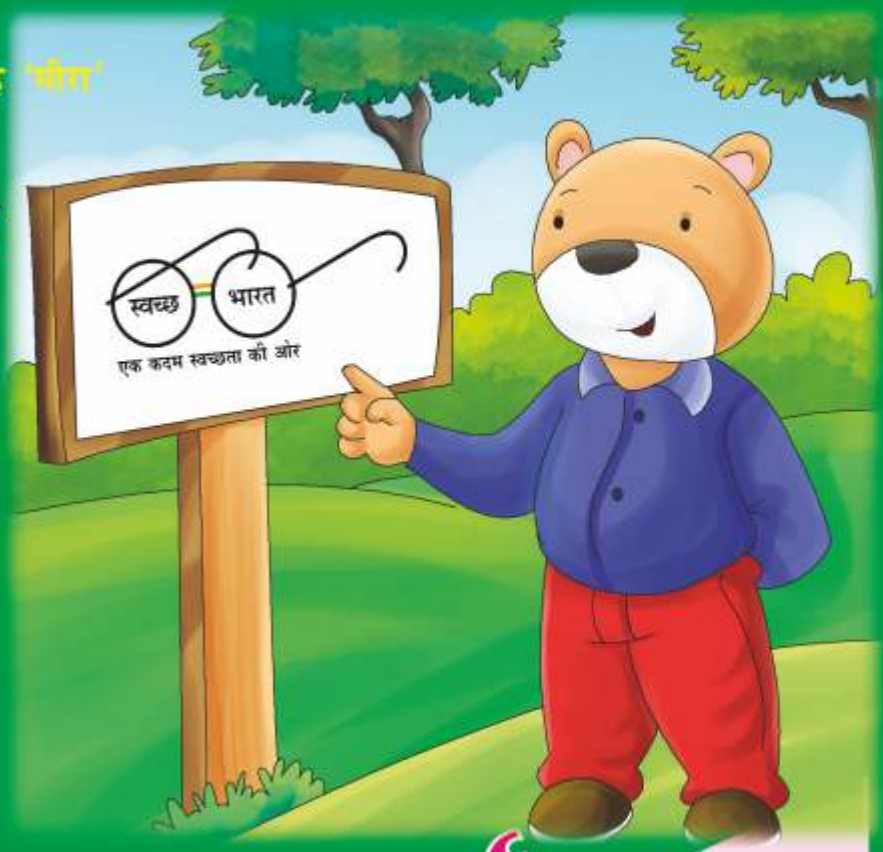

शहर के पास जंगल में,
लगा था राज दरबार।
भालूमल जी पढ़ रहे थे,
शहर का ताजा समाचार।।

स्वच्छ भारत का नारा,
सुर्खियों में छपा था।
शेर सिंह का मंत्रिपरिषद,
उस पर मंथन कर रहा था।।

अब चिन्ता की बात नहीं,
जंगल भी खुशहाल होगा।
स्वच्छ भारत अभियान से,
समस्याओं का निदान होगा।।

मुरझाई कलियां खिलेंगी,
वृक्ष पाएंगे नवजीवन।
प्रकृति नव श्रृंगार करेगी,
सुखमय होगा वातावरण।।

सीख लो भाई

रट्टूमल ने रट्टा लगाया,
सब प्रश्नों का घोटा लगाया।
पल्ले उसके कोई बात न आयी,
उल्टा-पुल्टा सब लिखकर आया।।

भारत की राजधानी दिल्ली,
खुश होकर उसने लिखा सिल्ली।
फिर सबने मिल उड़ायी खिल्ली,
हालत उसकी भाई हो गयी पतली।।

सुन मेरी बहना, सुन मेरे भाई,
रटन्त विद्या कभी काम नहीं आई।
बांध लो गांठ यह सिखलाई,
सोचो समझो और करो पढ़ाई।।

अप्रैल अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 सेफाली गौतम 14 वर्ष
गाँव : सुरैला, पोस्ट : परसरामपुर,
जिला : बस्ती (उ.प्र.)

2 तेजस्विनी शर्मा 10 वर्ष
म.नं. 117, काजी खेरा,
लाल बंगला, कानपुर (उ.प्र.)

3 भारती 13 वर्ष
भूचो मंडी,
भठिण्डा (पंजाब)

4 सुमति वर्मा 11 वर्ष
210, टाइप-2, केन्द्रांचल कॉलोनी,
गुलमोहर विहार, नौबस्ता, कानपुर (उ.प्र.

5 महक सोनी 14 वर्ष
दिल्ली पब्लिक स्कूल, झाकड़ी,
जिला : शिमला (हि.प्र.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

अर्पिता (कौशिक इन्कलेव, दिल्ली)
समसृष्टि (शालीमार बाग, दिल्ली)
कशिश (कृष्ण नगर, पानीपत),
नवनीत (अशोक विहार, जगाधरी),
खुशी (अशोक विहार, नकोदर),
श्लोक (दि मॉल, भठिण्डा), आदित्य (झाकड़ी),
आशिता (शिव नगर, सुल्तानपुर), युग (रावतभाटा),
रौनक (उत्तम नगर, दिल्ली),
सुदीक्षा (सचेंदी, कानपुर), अजय (तारा नगर, चुरू),
नवदिशा (लोकनायकपुरम, दिल्ली),
गुरुप्रीति (नांगलोई, दिल्ली), अवनी (अमरोहा),
स्वीटी (जगतदल), तरुण (धनपुरी),
यश (देवेन्द्र नगर, रायपुर), लतिका (अहमदाबाद),
यशस्वी (कमला नगर, आगरा),
अक्षरा (प्रयागराज), प्रथम (हरदेव नगर, दिल्ली),
पीयूष (देवली, दिल्ली),
वान्या (हड्सन लेन, दिल्ली), प्रतिभा (गुरुग्राम),
जितेन्द्र, आकृत, सार्थक, मनीष, रिया, प्रगति,
संजय, ज्ञानवीर (रायपुर),
वैशाली, भविका, कृष्णा, दक्ष, दक्ष धर्मेंद्र, चिराग,
आरती, हार्दिक, सुमित (गोधरा)।

जून अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 जून तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) अगस्त अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

बताओ तो जानें

– चाँद मोहम्मद घोसी

डोरियां सुलझाकर पता कीजिए,
कौन सा गुब्बारा किसका है?

जोरदार हवा के तेज झोंके में कुल कितने पक्षी उड़ रहे हैं? गिनती करके उनकी सही संख्या का पता लगाओ?

सर्वत्र ब्रह्म

गुरुदेव प्रवचन करके उठने ही वाले थे कि एक शिष्य ने प्रश्न कर दिया– भगवन् आप कहते हैं प्रभु हर स्थान पर है पर मुझे तो दिखाई नहीं देता।

गुरुदेव ने कहा– एक बर्तन में थोड़ा सा पानी ले आओ और एक ढेला (डली) नमक का भी ले आना। जब दोनों चीजें आ गई तो गुरुजी ने कहा– नमक का ढेला पानी में डाल दो। पानी को हिलाओ। अब ऊपर का पानी चखो।

शिष्य ने पानी चखकर उत्तर दिया– नमकीन है।

गुरुजी ने कहा– अब नीचे का पानी चखो।

शिष्य ने चखकर कहा– ये भी नमकीन है।

तब गुरुजी ने समझाया– पानी में नमक दिखाई नहीं देता किन्तु वह पानी के हर स्थान पर है; ऊपर, बीच में, नीचे। इसी प्रकार भगवान हमें दिखाई नहीं देता लेकिन वह हर स्थान पर सर्वत्र व्याप्त है।

– प्रस्तुति : ऊषा सभरवाल

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029
(TS)

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang
Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)